अंक01/वर्ष01/फरवरी2021/मासिक

दिल्ली शिक्षा

नए युग में

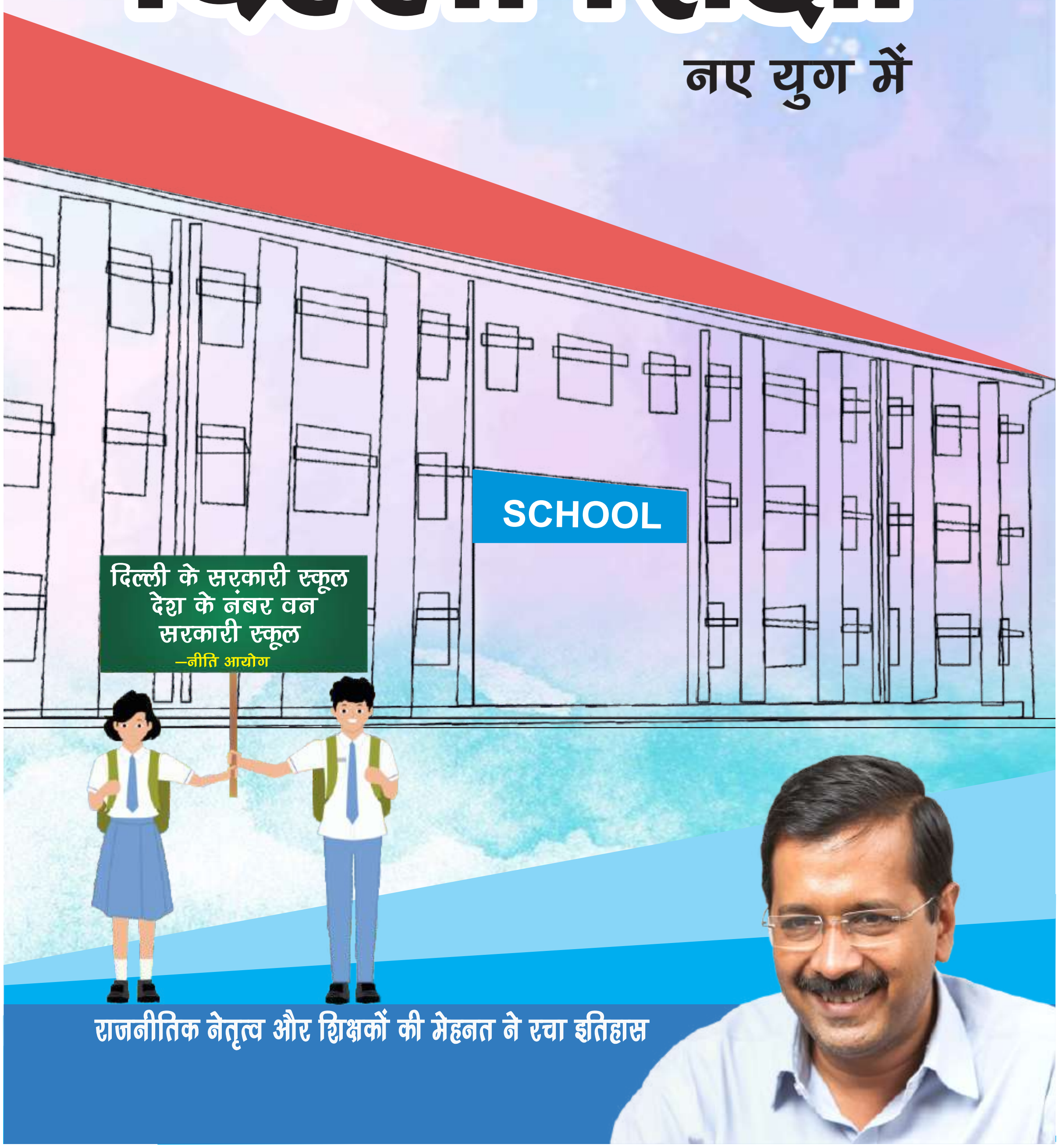

राजनीतिक नेतृत्व और शिक्षकों की मेहनत ने रचा इतिहास

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट,
नई दिल्ली - 110002
ऑफिस - 23392020,23392030
फैक्स - 23392111

अ.शा. पत्र संख्या : F1(9)/CMCO/2021/56
दिनाँक : 01-02-2021

अरविन्द केजरीवाल
मुख्यमंत्री

संदेश

दिल्ली सरकार का शिक्षा विभाग और सूचना एवं प्रचार निदेशालय मिलकर 'दिल्ली-शिक्षा' पत्रिका का प्रकाशन पुनः कर रहे हैं। यह दिल्ली के शिक्षा जगत के लिए बेहद हर्ष की बात है। मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका दिल्ली के शिक्षकों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगी। पिछले लगभग 6 वर्षों में दिल्ली में शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने में दिल्ली सरकार ने जो सफलता हासिल की है और जिसकी चर्चा देश ही नहीं, दुनिया में भी हो रही है, उस सफलता के पीछे सबसे बड़ा हाथ हमारे शिक्षकों का है। हमारे विद्यालय के प्रधानाध्यापकों का है। हमारे शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों ने देश-विदेश से मिल रही ट्रेनिंग और सरकार द्वारा दी जा रही आधुनिक सुविधाओं का लाभ उठाते हुए अपने-अपने स्कूलों में, अपनी कक्षाओं में जो मेहनत की है, जो नए-नए प्रयोग किये हैं, उसकी कहानियां बेहद प्रेरक हैं।

मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका दिल्ली के स्कूलों में हो रहे नए-नए प्रयोगों को न सिर्फ दिल्ली के हर एक शिक्षक तक लेकर जाएगी बल्कि इसका लाभ उन तमाम लोगों को मिलेगा जो दिल्ली के शिक्षा मॉडल से प्रेरणा लेना चाहते हैं।

मैं पत्रिका के प्रकाशन पर शिक्षा विभाग, प्रकाशन विभाग और पूरी संपादकीय टीम को शुभकामनाएं देता हूं।

(अरविन्द केजरीवाल)

दिल्ली शिक्षा

मासिक

दिल्ली सरकार
आप की सरकार

शब्दार्थ
सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली सरकार
ब्लॉक - 9, पुराना सचिवालय
दिल्ली–110054

अंदर के पन्नों पर

प्रधान संपादक

मनोज कुमार द्विवेदी
निदेशक , डी आई पी

संपादक

आलोक रंजन

समन्वय

प्रवीण मिश्रा
मनोज कुमार शर्मा
राहुल सिंह

फोटो

अजय कुमार शर्मा
पारूल शर्मा

डिज़ाइन एंड ग्राफ़िक्स

अभिषेक हरित
शाहनवाज आलम
शिक्षा शर्मा
महक वर्मा

दिल्ली के सरकारी स्कूल नंबर वन
–नीति आयोग
पेज -01

98% *रिज़ल्ट के आगे क्या ?*
पेज -06

सम्पादकीय मंडल

बी. पी. पांडेय, OSD, स्कूल ब्रांच
अरूण पटेल, पीएचडी स्कॉलर
अदिति भसीन, टीजीटी (अंग्रेजी)
आलोक मिश्रा, प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान)
आलोक तिवारी, असिस्टेंट प्रोफेसर
कादंबरी लोहिया, टीजीटी (अंग्रेजी)
जोगिन्दर, असिस्टेंट प्रोफेसर
दीप्ति चावला, टीजीटी (अंग्रेजी)
नीरू लोहिया, टीजीटी (अंग्रेजी)
डॉ नील कमल मिश्र, टीजीटी (विज्ञान)
भावना सवनानी, टीजीटी (विज्ञान)
मनु गुलाटी, टीजीटी (अंग्रेजी)
मुरारी झा, टीजीटी (सामाजिक विज्ञान)
रूचि वली, टीजीटी (हिंदी)
रोहित उपाध्याय, टीजीटी (गणित)
वंदना गौतम, प्रवक्ता (इतिहास)
विकास रंजन, टीजीटी (विज्ञान)
शीतल, टीजीटी (हिंदी)
संजय प्रकाश शर्मा, प्रवक्ता (भूगोल)
हरिशंकर स्वर्णकार, टीजीटी (हिंदी)
हरीश यादव, टीजीटी (अंग्रेजी)
आकाश सिंह
महेंद्र कुमार
सुमित कुमार

विशेष आभार

मनीष सिसोदिया
शिक्षा मंत्री , दिल्ली
एच. राजेश प्रसाद, आईएएस
प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग
पद्मिनी सिंगला, आईएएस
सचिव , सूचना एवं प्रचार निदेशालय
उदित प्रकाश राय, आईएएस
निदेशक, शिक्षा निदेशालय
शैलेन्द्र शर्मा, शिक्षा सलाहकार

टीचर
का इम्तिहान

पेज -13

आईआईटी, जेईई
कॉम्पिटीशन्स...

पेज -39

कुल पृष्ठ – 48

दिल्ली के सरकारी स्कूल
देश के नंबर वन सरकारी स्कूल

–नीति आयोग

राजनीतिक नेतृत्व और शिक्षकों की मेहनत ने रचा इतिहास

करीब 4 साल पहले दिल्ली के सरकारी स्कूलों की कुछ ऐसी तस्वीरों ने लोगों को चौंकाया था, जिन्हें देखकर ये कहना मुश्किल था कि ये तस्वीरें सरकारी स्कूलों की है या प्राइवेट स्कूलों की। ये उस वक्त की बात है जब मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार ने शिक्षा का अपना बजट दोगुना कर सबसे पहले सरकारी स्कूलों की पुरानी इमारतों को चाक–चौबंद करने और नई इमारतें बनवाने का काम शुरू किया था। स्कूल इमारत के बनने का सिलसिला अभी भी चल ही रहा है लेकिन दिल्ली के शिक्षा मॉडल की कहानियां प्राइवेट स्कूलों से बेहतर दिखने वाली स्कूल इमारतें की तस्वीरों से आगे निकल चुकी है। अब यहां क्वालिटी एजुकेशन की बात होने लगी है। हर साल दिल्ली के सरकारी स्कूल क्वालिटी एजुकेशन में अपने पिछले साल का रिकॉर्ड तोड़ कर आगे निकल रहे हैं। दिल्ली के स्कूलों के बारे में चर्चा यहां की अच्छी दिखने वाली इमारतें की ही नहीं होती बल्कि यहां शिक्षा में हो रहे नित्य नए प्रयोगों की, और इन प्रयोगों की वजह से लाखों बच्चों की जिंदगी में आ रहे बदलाव की हो रही है। एक नजर दिल्ली के शिक्षा मॉडल की कुछ ऐसी खास बातों पर, जो दिल्ली के सरकारी स्कूलों को एक अलग पायदान पर खड़ा करती है –

- नीति आयोग की नेशनल इनोवेशन इंडेक्स 2020 ने नेशनल अचीवमेंट सर्वे (NAS) में पूरे देश में नंबर वन होने का श्रेय दिल्ली के सरकारी स्कूलों में हुए व्यापक सुधारों को दिया है
- दिल्ली के सरकारी स्कूलों के नतीजे पिछले वर्ष 98% से ऊपर रहे जो कि अपने आप में एक रिकॉर्ड है।
- पिछले कई साल से दिल्ली के सरकारी स्कूलों के नतीजे प्राइवेट स्कूलों से आगे आ रहे है।
- इस साल जेईई और नीट की परीक्षाओं में दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चों ने कमाल कर दिया। एक स्कूल तो ऐसा है जहां से इस साल 80 में से 5 छात्र आईआईटी पहुंचे हैं। कई स्कूल ऐसे हैं जहां 80 में से 25 से ज्यादा छात्रों ने नीट की परीक्षा पास की है।
- दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चे अब अंतरराष्ट्रीय ओलंपियाड प्रतियोगिताओं में मेडल हासिल करने लगे हैं। पिछले साल ही दिल्ली के 2 छात्रों ने मॉस्को स्थित फिजिक्स–केमिस्ट्री ओलंपियाड में मेडल जीतकर भारत का नाम रोशन किया और तिरंगा लहराया था।
- सरकार अपने स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को विभिन्न योजनाओं के तहत कोडिंग(कंप्यूटर प्रोग्रामिंग) की ट्रेनिंग करा रही है और उन्हें विभिन्न

प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सहायता भी कर रही है।

- दिल्ली सरकार के सैकड़ों अध्यापक और प्रधानाध्यापक ब्रिटेन, अमेरिका, सिंगापुर, फिनलैंड आदि देशों से ट्रेनिंग लेकर आ चुके हैं।

- अंग्रेज़ी अध्यापकों की ट्रेनिंग अमेरिका के अंग्रेज़ी शिक्षण के एक्सपर्ट ट्रेनर्स द्वारा कराई जा रही है।

- दिल्ली सरकार ने अपने प्रधानाध्यापकों को स्कूल लीडरशिप के लिए IIM अहमदाबाद से खास ट्रेनिंग दिलाई है।

को समझाने में अध्यापकों का मार्गदर्शन करते हैं। इसी तर्ज पर हर स्कूल में एक टीडीसी यानी टीचर्स डेवलपमेंट कोऑर्डिनेटर भी बनाये गए हैं।

- दिल्ली के हर सरकारी स्कूल में स्कूल के रखरखाव के लिए अलग से एस्टेट मैनेजर रखे गए हैं। जिनका काम इमारत के रिपेयर और उसको साफ सुथरा रखने में शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों की मदद करना है।

- सरकार अपने हर स्कूल को लगभग सात लाख रुपये की राशि देती है। स्कूल के प्रिंसिपल की अध्यक्षता में गठित स्कूल मैनेजमेंट कमेटी द्वारा स्कूल के छोटे–मोटे काम कराने से

> दिल्ली के शिक्षा मॉडल की कहानियां प्राइवेट स्कूलों से बेहतर दिखने वाली स्कूल इमारतों की तस्वीरों से आगे निकल चुकी है। अब यहां क्वालिटी एजुकेशन की बात होने लगी है।

- दिल्ली सरकार ने अपने सभी अध्यापकों को मोबाइल टैबलेट उपलब्ध कराए हैं। इन मोबाइल टैब्स के इस्तेमाल में खर्च होने वाले डाटा का पैसा भी अध्यापकों को अलग से दिया जाता है।

- सरकार ने किसी विषय को पढ़ाने में आ रही दिक्कतों को सुलझाने या विषय को नए तरीके से पढ़ाने की तकनीक विकसित करने में अपने अध्यापकों की मदद के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित मेंटर टीचर्स रखे हैं। जो हर विषय को बारीकियों से छात्रों

लेकर बच्चों की विभिन्न तैयारियों के लिए रिसोर्स–पर्सन रखने और यहां तक कि अस्थाई अध्यापकों को रखने के लिए भी इस राशि का इस्तेमाल होता हैं।

- अभिभावकों को अपने बच्चों की शिक्षा में गहराई से जुड़ने के लिए दिल्ली सरकार के सभी स्कूलों में साल में तीन–चार बार मेगा पीटीएम होती है। इस मीटिंग में सभी टीचर्स अपने छात्रों के अभिभावकों को उनके बच्चों की

प्रगति के बारे में बताते हैं ।

- सरकार ने अपने स्कूलों में अध्यापकों के लिए आधुनिक सुविधाओं वाले स्टाफ रूम बनवाए हैं।

- प्राथमिक कक्षाओं के जो बच्चे अपनी किताब ठीक से नहीं पढ़ पाते या बेसिक मैथमेटिक्स के सवाल हल नहीं कर पाते, उनके पढ़ने और गणित के स्तर को सुधारने के लिए दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में मिशन बुनियाद नाम से कार्यक्रम चलाया जाता है ताकि बच्चे अगली क्लास में जाने से पहले अच्छे से पढ़ना और गणित के बुनियादीं सवालों को हल करना सीख सकें।

- नर्सरी से आठवीं क्लास तक के बच्चों के लिए दिल्ली के सरकारी स्कूलों में रोज़ाना हैप्पीनेस की क्लास लगती है। जिसमें बच्चे मेडिटेशन करते हैं और साथ ही अपने मन में होने वाली प्रतिक्रियाओं के विज्ञान को समझते हैं तथा परिवार एवं समाज में संबंधों के विज्ञान को भी समझते हैं।

- नौवीं से बारहवीं तक के बच्चों के लिए रोजाना 'एंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम' की क्लास लगती है, जिसमें बच्चों के आत्मविश्वास और उद्यमशीलता की क्षमताओं को बढ़ाने पर काम होता है।

- 11वीं और 12वीं क्लास के छात्रों को दिल्ली सरकार की ओर से 1000 रूपए की राशि सीडमनी के रूप में दी जाती है ताकि वह अकेले या समूहों में उस पैसे को कहीं निवेश करें, व्यापार करने के किसी आइडिया में लगाएं

और उससे मुनाफा कमा कर दिखाएं।

- दिल्ली सरकार अपने स्कूलों के बच्चों के लिए एक नया सिलेबस लेकर आ रही है– देशभक्ति पाठ्यक्रम। इसके जरिए हर बच्चे के अंदर अपने देश के प्रति सम्मान और प्यार को बढ़ाया जाएगा। हर बच्चे को सच्चा देशभक्त बनाया जाएगा ताकि वह ईमानदारी और मेहनत से अपने देश की सेवा में भी जुटे।

- दिल्ली सरकार परीक्षा प्रणाली में भी एक बड़ा बदलाव करने जा रही है। अभी तक किसी बच्चे का अपनी क्लास में पास या फेल होने का आधार साल के अंत में केवल 3 घंटे की एक परीक्षा होती है। जिसमें यह मूल्यांकन किया जाता है कि बच्चे ने पूरे साल क्या सीखा। दुनिया भर के स्कूल अब इस परीक्षा प्रणाली से आगे बढ़ चुके हैं। दिल्ली सरकार एक नया बोर्ड बना रही है जिसमें साल के अंत में 3 घंटे की परीक्षा की जगह पूरे साल कंटीन्यूअस इवेलुएशन प्रोसेस के तहत बच्चों की समझ और सीख का मूल्यांकन होगा।

- सरकार अगले 5 साल में अपने सभी स्कूल के सभी क्लासरूम्स को स्मार्ट क्लासरूम बनाने की योजना पर काम कर रही है।

- सरकार ने अपने सभी स्कूलों में बरामदे से लेकर सभी क्लासरूम, लैब, लाइब्रेरी आदि में आधुनिक सुविधाओं वाले सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। इनमें ये भी सुविधा है कि बच्चों के माता–पिता घर बैठे अपने बच्चे को क्लास में पढ़ते हुए अपने मोबाइल या कंप्यूटर पर ऑनलाइन देख सकते हैं।

- बांग्लादेश, अफगानिस्तान आदि देशों के शिक्षा मंत्री दिल्ली के सरकारी स्कूल देखने आ चुके हैं। नीदरलैंड के महाराजा और अमेरिका की पूर्व प्रथम महिला भी दिल्ली के सरकारी स्कूलों में विशेष दौरों पर आ चुके हैं।

- दिल्ली के शिक्षा मंत्री को दिल्ली के शिक्षा मॉडल और स्कूलों में हुए नए–नए प्रयोग के बारे में बताने के लिए रूस, ब्रिटेन अमेरिका, पेरू आदि देशों में बुलाया जा चुका है जहां उन्होंने दुनिया भर से आए शिक्षा मंत्रियों, शिक्षा अधिकारियों और शिक्षाविदों के समक्ष दिल्ली की उपलब्धियों को रखा है और उस पर चर्चा की है।

- दिल्ली के शिक्षा मंत्री को शिक्षा में उल्लेखनीय कार्यों के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षा मंत्री, चैंपियन ऑफ चेंज एवं महात्मा अवार्ड से नवाजा जा चुका है।

कुल मिलाकर दिल्ली के सरकारी स्कूलों में बेहतर सुविधाएं और बेहतरीन शिक्षा दोनों पर काम हो रहा है और इसी का नतीजा है कि आज ना सिर्फ स्कूलों के नतीजे अच्छे रहे हैं बल्कि सरकारी स्कूलों के बच्चे देश और दुनिया की प्रतियोगिताओं में भी सरकारी स्कूलों का नाम रोशन कर रहे हैं। दिल्ली के शिक्षा मॉडल में सबसे बड़ी बात ये है कि इसमें दिल्ली के हर आम आदमी के बच्चे चाहे वह गरीब हो या अमीर, सभी के लिए अच्छी शिक्षा की व्यवस्था हो रही है।

बी.पी. पांडेय
OSD, स्कूल ब्रांच

शानदार

2016 से अब तक 12वीं का रिज़ल्ट

हर साल नया रिकार्ड

निजी स्कूलों पर भारी पड़े सरकारी स्कूल, 88.37 प्रतिशत बच्चे पास

Delhi pass percentage improves

Raksha scored 100 in 3 subjects

सरकारी स्कूलों का प्रदर्शन निजी से बेहतर

निजी स्कूलों का 90.78 फीसदी और सरकारी स्कूलों का 94.24 फीसदी रहा परिणाम

Delhi govt schools see best-ever pass percentage

UP leads top scorer

3 परसेंट से ज्यादा बढ़ गया सरकारी स्कूलों का रिजल्ट

Govt students post best-ever results, 94% sail through

RECORD 203 govt schools secure 100% mark, up from 168 last year

900 kids choose govt school over pvt ones

RIGHT FOCUS School attracts students with no fees, swanky building and modern facilities

With 90.6% success rate, Delhi govt schools pull off a good show

168 Schools Get 100% Result; Private Schools Manage Strike Rate Of 88.3%

DELHI GOVT SCHOOLS NOW BEAT PRIVATE SCHOOLS IN CLASS XII BOARD RESULTS

show more than 90% pass percentage in Board results

सरकारी स्कूलों ने किया कमाल, निकले प्राइवेट से आगे

Delhi's govt schools top pvt — 5th time in a row

सरकारी स्कूलों का प्रदर्शन निजी से बेहतर

निजी स्कूलों का 90.78 फीसदी और सरकारी स्कूलों का 94.24 फीसदी रहा परिणाम

Govt schools take 9% lead over pvt

CAPITAL

Marginal Dip But Better Than CBSE Average

दिल्ली सरकार के स्कूलों में साइंस का टॉपर बना विकास

Govt schools outdo private ones second time in a row

CBSE SCRAPS REVALUATION

Govt schools perform better

'Education model made history': Kejriwal hails govt school results

Govt schools post best result in 20 years

OUT PERFORMED Private schools

OVERALL PASS PERCENTAGE AT 94.39%, KEJRIWAL, SISODIA CONGRATULATE STUDENTS

Govt schools power capital's high pass percentage, 98% clear Class XII board

SUKRITA BARUAH
NEW DELHI, JULY 13

HOW STUDENTS PERFORMED IN CAPITAL, ACROSS COUNTRY

98% से आगे क्या...?

हम शिक्षक साथियों के बीच पिछले कुछ महीनों से ये बात चर्चा का विषय बनी हुई थी कि अब हमारे सरकारी स्कूलों के नतीजे 98% तक पहुंच गए हैं, इसके बाद अब क्या ? इतने शानदार नतीजों के बाद अब हमारी अगली उपलब्धि क्या हो सकती है यानी अब हम शिक्षा में किस मंजिल को हासिल करने की ओर बढ़ेंगे ? ये चर्चा अभी चल ही रही थी कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों को एक और खिताब, नीति आयोग ने दे दिया। नीति आयोग की 2020 की रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली के सरकारी स्कूल देश भर के सरकारी स्कूलों में सबसे बेहतर हैं, यानी नंबर वन हैं। किसी भी संस्थान की मेहनतकश टीम के लिए इससे बेहतर बात क्या हो सकती है कि उनकी टीम को देश भर में नंबर वन टीम मान लिया जाए और वह भी भारत सरकार की नीति आयोग जैसी सर्वोच्च संस्था द्वारा।

देश भर में नंबर वन सरकारी स्कूल करार दिए जाने के बाद हम दिल्ली के शिक्षकों में यह सवाल अब और गहरा हो गया है कि अब हमारी अगली मंजिल क्या होगी ? हमारे बच्चे, हमारे स्कूल और हम सब शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धि का कौन सा अगला पायदान छुएंगे ? हमारे स्कूलों की इमारतें अच्छी बन गई हैं, स्कूल में पढ़ाने संबंधी सुविधाएं अच्छी हो चुकी हैं, बेहतर लैब बनाये गये है, पुस्तकालयों को शानदार रूप दिया गया है, खेल के मैदान अंतरराष्ट्रीय स्तर के बन रहे हैं, स्विमिंग पूल बन चुके हैं। हमारे शिक्षकों को देश–विदेश में शानदार ट्रेनिंग मिल रही है, प्रधान अध्यापकों को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में स्कूल लीडरशिप ट्रेनिंग दिलाई जा रही है, सरकारी स्कूलों के बच्चे इंजीनियरिंग और मेडिकल में प्रवेश के लिए आयोजित जेईई (JEE) और नीट (NEET) जैसी प्रतियोगी परीक्षा देकर आई.आई.टी. जैसे देश की सर्वश्रेष्ठ संस्थाओं में पहुंच रहे हैं। इतना ही नहीं बल्कि अब तो वार्षिक नतीजे भी 98%

देश भर में नंबर वन सरकारी स्कूल करार दिए जाने के बाद हम दिल्ली के शिक्षकों में यह सवाल अब और गहरा हो गया है कि अब हमारी अगली मंजिल क्या होगी? हमारे बच्चे, हमारे स्कूल और हम सब शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धि का कौन सा अगला पायदान छुएंगे?

आने लगे हैं। इसीलिए अब महत्त्वपूर्ण सवाल है कि अब आगे क्या?

हमारे मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री या शिक्षा निदेशालय की ओर से इस दिशा में आगे का लक्ष्य क्या निर्धारित होगा, ये कहना हम शिक्षकों के लिए मुश्किल है, लेकिन अपने नेतृत्व की पिछले पांच–छह वर्षों की सोच के आधार पर हम शिक्षक इसका कुछ अनुमान जरुर लगा सकते हैं। हमारा मानना है कि जब इमारतें अच्छी हो जाएं, सुविधाएं मिलने लगे, बच्चे पास होने लगें, असली काम तब शुरू होता है। शिक्षा के जरिए समाज और राष्ट्र के निर्माण का कार्य।

> जब इमारतें अच्छी हो जाएं, सुविधाएं मिलने लगें, बच्चे पास होने लगें, असली काम तब शुरू होता है। शिक्षा के जरिए समाज और राष्ट्र के निर्माण का कार्य।

अभी तक जो कुछ हुआ वो आधार है। हमारा असली काम शिक्षा के जरिए एक समर्थ समाज और राष्ट्र बनाने का है। स्कूल की अच्छी इमारतों और लगभग सभी बच्चों के पास होने तक ये सोचना कठिन था। लेकिन अब समय आ गया है कि हम शिक्षक अपने कंधों पर ये जिम्मेदारी उठाएं। अपने पास पढ़ रहे बच्चों को हम अकादमिक उपलब्धियां तो दिलवाएंगे ही साथ ही ये भी सुनिश्चित करेंगे कि हर बच्चा जब स्कूल से अपनी पढ़ाई पूरी करके जाए तो वह सही मायने में एक सुशिक्षित व्यक्ति के रूप में अपना जीवन सफलतापूर्वक जीने के योग्य हो। 98% नतीजे लाने और देश भर में नंबर वन सरकारी स्कूल का तमगा हासिल करने के बाद अब हमारा लक्ष्य है कि हमारे स्कूलों से पास होने वाला हर बच्चा –

- पढ़ाई–लिखाई में अपने विषयों में इतना दक्ष हो कि वह दुनिया के किसी भी विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के लिए योग्य हो।
- हर छोटे–बड़े काम को करते वक्त उसके अंदर पूरा आत्मविश्वास हो।
- निडर होकर कुछ नया करने या अलग हटकर करने के लिए हमेशा तैयार हो।
- वो समस्याओं का रोना रोने वाला न बने बल्कि समाधान प्रस्तुत करने वाला बने।
- वह ईमानदार, देश प्रेमी और जिम्मेदार नागरिक हो।
- उसमें अपने परिवार और समाज के साथ संबंधों को निभाने की पूरी योग्यता हो।
- वह पढ़ लिखकर अपनी डिग्री लेकर नौकरियों की कतारों में न भटकता फिरे बल्कि उसमें यह योग्यता हो कि वह अपनी पढ़ाई लिखाई के आधार पर कुछ ऐसा भी कर सके कि उसके काम से दूसरों को भी नौकरी मिल सके।

यह सब बातें कही तो पहले भी जाती रही हैं लेकिन एक ऐसे दौर में जब स्कूलों में शिक्षक के पास क्लासरूम में पढ़ाने के

लिए ठीक से एक बोर्ड भी न हो और बच्चों के पास बैठने के लिए कुर्सियां तक न हों ऐसे में ऊपर लिखे हुए विचारों को शिक्षा के जरिये हासिल करने की अपेक्षा करना सिर्फ ख्याली पुलाव है। लेकिन अब जब शिक्षा का आधार मज़बूत हो रहा है तो हम शिक्षकों को भी ये जिम्मेदारी निभानी होगी कि हम शिक्षा के जरिए समाज और राष्ट्र के आधार को मज़बूत बनाएं। दिल्ली में वो समय आ गया है या यूं कहें कि दिल्ली के सरकारी स्कूल के हम शिक्षकों के कंधों पर वक्त ने अब यह जिम्मेदारी रख दी है। अब यह हम शिक्षकों पर है कि हम कितनी मेहनत से और समझदारी से इस जिम्मेदारी को निभा पाते हैं। साथ ही साथ हमारे शिक्षा विभाग और नेतृत्व की भी यह जिम्मेदारी है कि इस दिशा में काम करने के लिए हमें कैसे और कितना प्रोत्साहन दे पाते हैं।

दीप्ति चावला
मेंटर टीचर, अंग्रेजी

शीतल
मेंटर टीचर, हिन्दी

अगर आप 'दिल्ली शिक्षा' पत्रिका की सदस्यता (सब्सक्रिप्शन) लेना चाहते हैं तो आप हमें मेल कर सकते हैं।

हमारा मेल आईडी है–
delhishiksha02@gmail.com

आगे की बात

शिक्षा और स्वास्थ्य किसी भी समाज के विकास की नींव होते हैं। पिछले कुछ माह के अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर मैं यह विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि हमारे प्यारे शहर को कोरोना के चंगुल से सुरक्षित बाहर निकालने में जितना योगदान हमारे स्वास्थ्य कर्मियों व शिक्षकों का रहा है, उतना संभवतः किसी अन्य का नहीं। ये मेरा सौभाग्य रहा कि कोरोना महामारी के इस चुनौतीपूर्ण दौर में, मुझे दिल्ली के शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसे महत्त्वपूर्ण विभागों में सक्रिय रूप से सेवा करने का अवसर मिला।

मैनें इन विषम परिस्थितियों में अपनी आंखों से इस शहर की अलग–अलग आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दिल्ली के सरकारी स्कूलों और अध्यापकों को नए–नए अवतारों में ढलते देखा है। अपना मूल स्वरूप छोड़कर, स्कूल कभी क्वारंटाइन सेंटर बने तो कभी नाईट शेल्टर। टीचर्स ने कभी एयरपोर्ट पर यात्रियों की सुरक्षा का जिम्मा संभाला तो कभी दूर दराज के गांवों–कस्बों की ओर पैदल ही दौड़े जा रहे मजदूर परिवारों को दिल्ली की सड़कों पर भोजन परोसा। सच कहता हूं,विपत्ति में दूसरों की सेवा का ऐसा जज़्बा मैंने अपने सेवाकाल में और कहीं नहीं देखा।

टीचर्स ने कभी एयरपोर्ट पर यात्रियों की सुरक्षा का जिम्मा संभाला तो कभी दूर दराज के गांवों-कस्बों की ओर पैदल ही दौड़े जा रहे मजदूर परिवारों को दिल्ली की सड़कों पर भोजन परोसा। सच कहता हूं, विपत्ति में दूसरों की सेवा का ऐसा जज़्बा मैंने अपने सेवाकाल में और कहीं नहीं देखा।

अब एक नई चुनौती सामने है। स्कूल सीमित रूप से खुल गए हैं। नौवीं से बारहवीं क्लास के छात्र करीब दस माह के अंतराल के बाद विद्यालय लौट आए हैं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, कि सब कुछ जल्द ही सामान्य हो जाए और हमारे बच्चों के कोलाहल से हमारे विद्यालय वापस से गुलज़ार हो जाएं।

अब जबकि ऐसा आभास हो चला है कि कोरोना का बुरा दौर पीछे छूटने को है तो शिक्षा निदेशालय अपने प्रिय विद्यार्थियों के लिए अनेक नई योजनाओं पर काम कर रहा है। उनके लिए नई–नई राहें तैयार कर रहा है। विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए नीट और जेईई की परीक्षाओं की तैयारी के लिए बहुत कम खर्च पर अतिरिक्त कोचिंग की व्यवस्था की जा रही है। जिससे हमारे

राजकीय विद्यालयों में विज्ञान पढ़ने वाले प्रतिभावान विद्यार्थी धन के अभाव के कारण आईआईटी या मेडिकल कॉलेज में प्रवेश से वंचित ना रह जाएं। इसलिए कई तरह के मोबाइल ऐप्स, वेबसाइट और सॉफ्टवेयर बनाने में काम आने वाली कंप्यूटर की भाषाएं (कोडिंग प्रोग्रामिंग लैंग्वेज) अपने बच्चों को सिखाने का भी कार्यक्रम है। कंप्यूटर की भाषाएं ही नहीं बल्कि देश–विदेश में बोली जाने वाली भाषाएं– जिन्हें सीखने से, आगे चलकर नौकरियों की अच्छी संभावनाएं बनें जैसे फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश आदि को भी हमारे स्कूलों में सिखाने की योजना है।

अर्ली चाइल्डहुड केयर के लिए भी हम जल्द ही नया करिकुलम लेकर आ रहे हैं जिससे हम छोटे बच्चों का विकास शुरू से ही सही दिशा में सुनिश्चित कर पाएंगे। अभी नई–नई आई नेशनल एजुकेशन पॉलिसी के प्रावधानों से प्रेरणा लेकर हम दिल्ली में नए करिकुलम और असेसमेंट के नए टूल्स भी ला रहे हैं। हमारे बच्चे जो हमारा गौरव हैं, अब इन नए तरीकों से सीखेंगे और उनका असेसमेंट भी अब नए टूल्स से होगा, जिससे उनकी प्रतिभा में और निखार आएगा।

जल्द ही हमारे राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र की सेहत की नियमित जांच की जाएगी जिससे कि उसके स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं का समय पर पता भी लग सकेगा और इलाज में मदद भी संभव हो सकेगी। एक अन्य महत्वाकांक्षी योजना, दिल्ली के बच्चों के लिए 100 नए 'स्कूल्स ऑफ एक्सिलेंस' खोलने की भी है। ये स्कूल अपने आप में दिल्ली के सिग्नेचर स्कूल होगें, जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शैक्षणिक सुविधाएं दी जाएंगी। शिक्षा निदेशालय दिल्ली के हर बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए कृतसंकल्प है, और वह इस दिशा में निरंतर प्रयासरत भी है।

उदित प्रकाश राय (भा. प्र. से.)
शिक्षा निदेशक, दिल्ली

जो शिक्षा लोगों को सिर्फ रोजी-रोटी कमाने की योग्यता देती है और जीवन के लिए कोई अंतर्दृष्टि नहीं देती, वह न केवल अधूरी है बल्कि घातक भी है।

आखिर क्यों इसे कहते हैं दिल्ली शिक्षा क्रांति

नोम चॉम्स्की दुनिया के सर्वश्रेष्ठ भाषाविद् एवं चिंतकों में से एक हैं। अपने लेखों और भाषणों में वे लोगों का ध्यान अक्सर इस ओर दिलाते रहते हैं कि दुनिया भर में सरकारें अपने हिस्से का काम कॉरपोरेट्स को सौंपती जा रही हैं। इसीलिए आधुनिक समय में दुनिया भर में सरकारों को बड़े–बड़े कॉरपोरेट घराने नियंत्रित करने लगे हैं और सरकार के तमाम फैसलों पर कॉरपोरेट्स का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। सरकार अगर कोई काम कराने के लिए कॉरपोरेट्स का इस्तेमाल करें तो इसमें कोई नुकसान नहीं है लेकिन हमें ये भी ध्यान रखना होगा कि कॉर्पोरेट हर क्षेत्र को केवल और केवल मुनाफ़े की दृष्टि से देखेगा। ऐसे में लोगों की बेसिक जरूरतों से जुड़ी हुई सरकारी सेवाएं जैसे शिक्षा और चिकित्सा आदि को मुनाफा कमाने के मकसद से कॉरपोरेट्स को सौंपे जाने पर सवाल भी उठते रहते हैं।

स्कूली शिक्षा को विकसित देशों में अभी तक कॉरपोरेट की निगाहों से बचा कर रखा गया है। लेकिन उनकी निगाहें विकासशील देशों की स्कूली शिक्षा पर पड़ चुकी हैं। बहुत तेजी से एशिया और अफ्रीका के विकासशील देशों में स्कूली शिक्षा व्यवस्था का बाज़ारीकरण कर दिया गया है।

> दिल्ली शिक्षा क्रांति चुनौती देती है उस विचारधारा को जो शिक्षा जैसी मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं की भी खरीद-फरोख्त पर उतारू है। दिल्ली शिक्षा क्रांति की सफलता सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया के तमाम विकासशील देशों को एक राह दिखाएगी कि सरकार अगर चाहे तो लोगों के बुनियादी हक से जुड़े मसलों को कॉरपोरेट के हवाले होने से बचा सकती है।

1990 के दशक में भारत में आर्थिक सुधार की घोषणा की गई और इसके साथ ही एक नई सामाजिक विभाजन की तस्वीर सामने आई। देश भर में अमीरों के लिए तमाम व्यवस्थाओं से भरपूर निजी स्कूलों का उदय हुआ तो वहीं गरीबों के लिए सुविधा विहीन सरकारी स्कूल व्यवस्था बच गई, जो बीतते सालों के साथ लगातार खंडहर में बदलती रही। जिस गति से पूरे देश में निजी स्कूल खुल रहे थे, लगभग उसी गति से सरकारें सरकारी स्कूलों में किसी भी तरह के निवेश से अपना हाथ पीछे खींच रही थीं। थोड़ा सा अध्ययन करने पर आप जान पाएंगे कि अधिकतर मामलों में सरकारी स्कूलों का पतन उसी क्षेत्र में हुआ जहां खुद ज़िम्मेदार लोग प्राइवेट स्कूल की उन्नति की राह आसान बना रहे थे।

दिल्ली शिक्षा क्रांति करीब– करीब 25 सालों से चली आ रही इस भेदभाव वाली

शिक्षा व्यवस्था को तोड़ती है। दिल्ली पूरे देश में पहला ऐसा राज्य बना जहां यह सुनिश्चित हुआ कि गरीब बच्चों के लिए भी तमाम सुविधाओं से युक्त सरकारी स्कूल की व्यवस्था की जा सकती है। खंडहर में तब्दील हो चुकी सरकारी स्कूल की इमारतें लोगों के दिमाग में किस कदर गहरी बैठ चुकी हैं, कि इस सम्बन्ध में एक वाक़या स्कूल के गेट पर तैनात एक सुरक्षा गार्ड मुझे बता रहा था। वह बताते हैं कि हमें कई ऐसे पेरेंट्स मिलते हैं जो पूछते हैं "किसी ने भेजा है कि यहां पर कोई सरकारी स्कूल है, क्या आप हमें बता सकते हैं कि यहां आस–पास कौन सा सरकारी स्कूल है"।

जब मैं उन्हें बताता हूं कि यही सरकारी स्कूल है तो पेरेंट्स को अपनी आंखों पर यकीन नहीं होता है। वे फिर से पूछ बैठते हैं, सही–सही बताओ, कहीं तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो ?

दशकों से लोगों के दिमाग में बिठा दिया गया है, वह दृश्य जिसमें स्कूल के नाम पर दो कमरों की कोई एक इमारत जहां टॉयलेट अगर है तो फंक्शनल नहीं है, बिजली अगर है तो कभी आती नहीं है। लाइब्रेरी किसे कहते हैं, शायद आज भी लाखों सरकारी स्कूल यह नहीं जानते हैं। दिल्ली शिक्षा क्रांति उस दृश्य को तोड़ती है। आखिर आमूलचूल परिवर्तन ही तो क्रांति कहलाता है।

दिल्ली शिक्षा क्रांति चुनौती देती है उस विचारधारा को जो शिक्षा जैसी मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं की भी खरीद–फरोख़्त पर उतारू है। दिल्ली शिक्षा क्रांति की सफलता सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया के तमाम विकासशील देशों को एक राह दिखाएगी कि सरकार अगर चाहे तो लोगों के बुनियादी हक से जुड़े मसलों को कॉरपोरेट के हवाले होने से बचा सकती है।

जिस देश में 90% कामकाजी महिलाएं और 80% के आसपास कामकाजी पुरुष 10,000 रुपये प्रतिमाह से कम के वेतन पर अपना जीवन– यापन करते हैं वहां अगर एक मजबूत सरकारी स्कूल व्यवस्था के तंत्र को खड़ा नहीं किया गया तो आखिर हम किस प्रकार का देश बनाएंगे। हमारे संवैधानिक आदर्श जिसमें इस देश के हर नागरिक के लिए एक सम्मान एवं गरिमामय जीवन की कल्पना की गई है, एक मजबूत सरकारी स्कूल व्यवस्था के बिना संभव नहीं है और इस दिशा में दिल्ली में हो रही शिक्षा क्रांति एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुरारी झा
मेंटर टीचर

शिक्षकों का कड़ा प्रशिक्षण

टीचर का इम्तिहान

साल 2017–2018 में एक लैंग्वेज टीचर के रूप में मैं स्वयं को बहुत सफल मानती थी। अपने विषय का अच्छा ज्ञान, पढ़ने एवं पढ़ाने का शौक, बच्चों से लगाव, टेक्नोलॉजी के प्रयोग में निपुणता, दसवीं क्लास में 100 प्रतिशत परीक्षा परिणाम, अंग्रेज़ी भाषा में स्टेट लेवल तक डिबेट प्रतियोगिता, निबंध लेखन में छात्रों की भागीदारी एवं जीत और अब तो मेंटर भी बन गयी थी। सभी कुछ तो अच्छा था। फिर भी जब कभी छात्रों के लैंग्वेज लेवल को देखती थी तो केवल 50 प्रतिशत छात्र ही ऐसे थे जो स्वतंत्र रूप से अपनी बात रख सकते थे।

तब मुझे दिल्ली सरकार की एक नई योजना के बारे में पता चला जो अंग्रेजी टीचरों के लिए शुरू की गई थी। जब मैंने शुरू में इसके बारे में सुना था तो सोचा कि ये मेंटर टीचर्स के लिए एक नियमित व साधारण ट्रेनिंग कार्यक्रम है। जब एससीईआरटी में पहले ही दिन कोर्स के डिज़ाइन को हमारे सामने लाया गया तो मैं समझ गई कि यह कुछ अलग है।

पहले ही भाग के दौरान मैंने महसूस किया कि यह काम आसान नहीं है। सबसे कठिन काम था टाइम लाइन का पालन करना, दी गई सामग्री को पढ़ना और दैनिक कार्यों को पूरा करना। हर रोज अनगिनत रीडिंग कार्य, लिखित असाइनमेंट्स को पूरा करना आदि। कई बार मन में आता, यह कहां फंस गई, इतना काम और ऊपर से स्कूल व घर की जिम्मेदारियां। बच्चों की दसवीं– बारहवीं की पढ़ाई और मैं ये सब नई जिम्मेदारियां लेकर बैठ गई। मन होता कि बीच में ही छोड़ दूं लेकिन फिर इस कोर्स के आउटकम के बारे में

विचार करने पर दोगुनी शक्ति से जुट जाती।

पहले हिस्से की कठोर ट्रेनिंग ने दूसरे भाग के लिए आधारशिला रखी। दूसरा चरण इतना मुश्किल नहीं लगा क्योंकि पहले चरण के अनुभव ने हमे तैयार कर दिया था। फिर एक और ट्रेनिंग में जाने का मौका मिला। ये ट्रेनिंग दिल्ली सरकार ने अमेरिकी दूतावास के सहयोग से आयोजित की थी। इसमें अमेरिकी टीचर– ट्रेनर, दिल्ली के सरकारी स्कूलों के अंग्रेज़ी शिक्षकों की ट्रेनिंग के लिए आ रहे थे। TESOL यानी Teaching of English to Speakers of Other Languages नाम की इस ट्रेनिंग ने मेरा सोचने का नजरिया ही बदल दिया। इसमें देखकर समझ में आया कि हम शिक्षकों को भी लगातार नए– नए तरीके से और कठिन प्रशिक्षण की जरूरत है।

अब आया तीसरा चरण, शिक्षण अभ्यास और अवलोकन। थोड़ा तनाव तो था। कौन सी शिक्षण रणनीति व कौन सी क्लास में कौन सा टॉपिक लिया जाए, इसी बात पर बहुत चिंतन किया। इस मामले में बहुत सोच विचार करने के बाद मैंने कुछ रणनीतियों पर निर्णय लिया और पाठ्य योजना तैयार कर उन्हें मंजूरी के लिए भेज दिया।

फिर आया एक्शन वीक। तय दिन अमरीकी सेंटर द्वारा तय रिसर्च ऑब्जर्वर स्कूल पहुंची। पहली बार क्लास के फॉर्मल ओवरव्यू (औपचारिक अवलोकन) का स्ट्रेस मैंने महसूस किया। बार– बार लगता था कि कहीं मैं नियोजित रणनीतियां भूल न जाऊं। इसी ख्याल से मुझे बहुत घबराहट हो रही थी। होती भी क्यों नहीं ? यह एक ग्रेडेड अवलोकन था जिस पर मेरा मूल्यांकन होना था और मुझे अंक मिलने थे। मैं एक अनुभवी टीचर, जो हमेशा अपने बोर्ड की परीक्षा देने वाले छात्रों को समझाती थी कि 'किसी परीक्षा से घबराने की जरूरत नहीं है क्यों कि परीक्षाएं तो हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं और वे आती जाती हैं। इन परीक्षाओं को हमें न तो हौआ बनने देना है और ना ही अपने ऊपर हावी होने देना है'। उस दिन समझ आया कि 'कहना आसान है और करना मुश्किल' क्योंकि परीक्षा जो भी हो आपको स्ट्रेस देती ही है। हर तरह के संभव उपाय व पूर्ण तैयारी की वजह से टीचर ट्रेनिंग सफल रही और अवलोकन में मुझे सकारात्मक टिप्पणी भी मिली।

> TESOL नाम की इस ट्रेनिंग ने मेरा सोचने का नजरिया ही बदल दिया। इसे देखकर समझ में आया कि हम शिक्षकों को भी लगातार नए- नए तरीके से और कठिन प्रशिक्षण की जरूरत है।

ये ट्रेनिंग मेरे लिए बहुत उपयोगी साबित हुई। प्रमुख फायदा था –टीचिंग प्रक्रिया

की नयी समझ। इस पाठ्यक्रम ने मुझे विभिन्न शिक्षण रणनीतियों से परिचित करवाया। कैसे छात्रों के सीखने के स्तर में अंतर को कम करें, यह समझने में काफी सहायता मिली। जिसकी कमी मैं हमेशा अपनी क्लास में महसूस करती थी। TESOL की ट्रेनिंग के बाद छात्रों के साथ बेहतर जुड़ाव महसूस हुआ और मैं उन चुनौतियों को समझने में सक्षम हुई जिनका मेरे छात्र सामना करते थे। आंतरिक–बाहरी सर्कल, गैलरी वॉक और जिगसॉ रीडिंग जैसी तकनीक के उपयोग ने छात्र–छात्राओं और टीचर के बीच बातचीत को अगले स्तर तक ले जाने में मदद की।

एक और बात जो मैंने महसूस की वह थी– हमारे प्रशिक्षकों की प्रतिबद्धता। जिस प्रकार वे हमारे लिए सत्र की योजना बनाते थे, वह प्रमाण था उनकी मेहनत का। पूरी प्रक्रिया के दौरान मैंने उनसे सत्र के लिए फुलप्रूफ प्लान बनाना सीखा। मैंने सीखा कि पहले से सभी प्रतिभागियों के लिए फोटोकॉपी सामग्री की उपलब्धता जैसे छोटे विवरणों पर ध्यान देना प्रतिभागियों के लिए सामग्री की ग्रहणशीलता के लिए चमत्कार कर सकता है।

इस ट्रेनिंग कार्यक्रम को अब 2020–2021 में स्कूलों में तैनात टीचरों के लिए प्रस्तावित किया गया है। लेकिन इस सिलेबस का परिणाम इतना सकारात्मक था कि अन्य विषयों के टीचर भी इस सिलेबस से जुड़े सबक का लाभ उठाना चाहते हैं। TESOL के दौरान मेरे बहुत सारे ऐसे पल रहे हैं, जिन्हे मैं नहीं भूल सकती। जब मेरी एक छात्रा ने फ़िलप्ड क्लासरूम के सेशन को इंग्लिश में लीड करने के बाद मुझसे कहा 'मैम, द बटरफ्लाईज इन माय स्टमक हैव फ्लोन अवे परमानेंटली' तो मुझे लगा कि यह कोर्स करना सार्थक हुआ।

नीरू लोहिया
मेंटर टीचर, अंग्रेज़ी

शिक्षा की दो जरूरी सीढ़ियां होती हैं। पहली है सूचना और दूसरी है, ज्ञान। दोनों में बहुत फर्क है। सूचना वह है जो हमें बाहर से मिलती है और ज्ञान वह है जो हमारे भीतर से आता है।

सातवीं तक पढ़ने में अटकती थी, अब बन गई टॉपर

पूजा, दिल्ली के सरकारी स्कूल से पास हुई एक मेधावी छात्रा है। इस साल दसवीं की बोर्ड परीक्षा में उसने 95% अंक हासिल किए हैं। उसका नाम उन बच्चों में शामिल है जिन्हें अपने स्कूल में बेहतरीन अंक हासिल करने पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने अपने घर बातचीत के लिए बुलाया है। वह स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर रही है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी का कैसे अभिवादन करेगी, कैसे उनसे बात करेगी,क्या कहेगी, अगर वह सवाल पूछेंगे तो क्या जवाब देगी। उसके मन में सैकड़ों सवाल हैं और सैकड़ों जवाब भी हैं।

सरकारी स्कूल की कहानी एक बच्ची के नजरिए से

वह सुबह जल्दी ही उठ कर तैयार हुई और सोचने लगी कि 5 साल पहले वह जब सातवीं क्लास में पढ़ती थी तो उसे गणित के साधारण से जोड़ने– घटाने के सवाल करने में ही पसीने छूट जाते थे। उसे गणित से बहुत डर लगता था। गणित ही नहीं हिंदी भी पढ़ने में उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। 2016 में जब वह सातवीं क्लास में थी तो स्कूल में चुनौती नाम का एक कार्यक्रम शुरू हुआ था। चुनौती कार्यक्रम में सरकार ने छठी, सातवीं, आठवीं क्लास में पढ़ने वाले बच्चों के अपनी किताब को ठीक से पढ़ने और गणित के सामान्य सवाल हल करने की क्षमता का आकलन करने के लिए क्लास में टेस्ट लिए थे। पूजा उस टेस्ट में बहुत अच्छा नहीं कर पाई थी। क्लास टीचर ने उसे कहा था कि अपने विषय में आगे बढ़ने से पहले उसे कुछ समय अपने बेसिक मैथ्स और रीडिंग स्किल पर काम करना होगा। स्कूल में ऐसे और भी बच्चे थे और छठी, सातवीं, आठवीं के सभी बच्चों के लिए अपनी किताब पढ़ने और गणित के सामान्य जोड़ घटाव जैसे सवालों को हल करने की क्षमता के आधार पर अलग–अलग समूह बनाए गए थे। पूजा को निष्ठा समूह में रखा गया था। निष्ठा का मतलब था, वह बच्चे जिन्हें आगे की पढ़ाई करने से पहले अपना मैथमेटिक्स और रीडिंग स्किल ठीक करने के लिए अलग से क्लास लेनी है।

निष्ठा ग्रुप की क्लास में पूजा को रोजाना सुबह एक घंटा हिंदी और एक घंटा गणित की क्लास अलग से लेनी होती थी। इस क्लास में बेहद रोचक गतिविधियों द्वारा पढ़ना और गणित करना सिखाया जाता था। शुरू में तो पूजा को स्वयं पर

निराशा हुई थी लेकिन धीरे–धीरे निष्ठा की वो क्लास पूजा की पसंद की क्लास बन गई। जिसमें वह कहानियां पढ़ती थी, कहानियां पढ़कर रोल प्ले करती थी। वह अक्षर और शब्दों के खेल भी खेलती थी। वो पढ़ भी सकती है ये देखकर धीरे–धीरे उसका आत्मविश्वास भी बढ़ने लगा। उसके स्कूल में रीडिंग कैंपेन के अंतर्गत एक रविवार को बच्चों के माता–पिता को भी बुलाया गया था। पूजा ने जब अपना चैप्टर ठीक से पढ़ कर सुनाया तो उसको अच्छी तरक्की के लिए इनाम भी मिला था। उसकी मां को पहली बार यह देख कर खुशी हुई थी कि अब उनकी बेटी पढ़ने लगी है। यहीं से पूजा की पढ़ाई में और निखार आया। अब दिल्ली के स्कूलों में नई इमारत बनाने की शुरुआत हो चुकी थी। नए क्लासरूम, स्मार्ट बोर्ड, साफ–सुथरे शौचालय, पीने का साफ पानी आदि सभी व्यवस्थाएं दिल्ली सरकार द्वारा सुनिश्चित की जाने लगी थी। साफ सफाई के लिए उनके स्कूलों में मैनेजर भी नियुक्त किए गए थे। एस्टेट मैनेजर के आने से स्कूल की प्रिंसिपल को बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए काफी समय मिल जाता था। टीचर्स के भी पढ़ाने के तौर तरीकों में बदलाव की कोशिश हो रही थी। बीच–बीच में मेंटर टीचर आकर पढ़ाने के तरीकों को देखती और अध्यापकों को नए नए तरीके, जिसमें पढ़ने लिखने के साथ–साथ गतिविधियां कराने पर भी जोर होता था, उनके बारे में सिखाते।

पूजा को याद आ रहा था कि पढ़ाई में उसकी मदद करने के लिए दिल्ली सरकार ने उसके स्कूल के टीचर्स के द्वारा ही उनके लिए प्रगति नाम की एक किताब बनवाई थी। इस किताब में उनकी एनसीईआरटी की पुस्तकों के विषयों को ही सरल भाषा में और गतिविधियों के माध्यम से बताया गया था। धीरे–धीरे पढ़ने और गणित के साथ–साथ पूजा की रुचि विज्ञान में भी बढ़ने लगी थी। पूजा के स्कूल की विज्ञान की टीचर भी मेंटर टीचर के रूप में 5 स्कूलों में काम करने लगी थी। वह जब भी अपने स्कूल आती थी तो अक्सर अपने साथी अध्यापकों के साथ साझा करती थी कि उन्हें किस प्रकार अलग–अलग प्रशिक्षण मिले हैं, देश और विदेश की शिक्षा पद्धति को सीखने का अवसर मिला है। नए–नए तरीके सीखने की वजह से उनके क्लास के माहौल पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा था। मेंटर टीचर महीने में एक बार स्कूल के सभी टीचर्स के साथ मीटिंग लेती थी और उन्हें बहुत सारी तकनीकों के बारे में बताती थी। उनका कहना था कि कक्षा में पीछे बैठकर कक्षा की गतिविधियों को देखने से उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलता था और वह खुद भी एक बेहतर शिक्षक बन रही थी।

अगर आज कोई पूजा से पूछे, पिछले चार–पांच साल स्कूल की सबसे अविस्मरणीय घटना क्या है तो उसे याद आती है पहली मेगा पेरेंट टीचर मीटिंग। वह पहली बार अपने माता–पिता को लेकर स्कूल आई थी। उसके माता–पिता थोड़ा सकुचाए हुए

स्कूल आए थे क्योंकि उन्हें लग रहा था कि स्कूल में कोई उन्हें अंदर जाने देगा कि नहीं। लेकिन उसने स्कूल के बच्चों और शिक्षकों के द्वारा मेगा पीटीएम के लिए माता–पिता को आमंत्रित करने के लिए बनाया हुआ कार्ड जब अपने पेरेंट्स को दिया तो उन्हें यकीन नहीं हुआ कि स्कूल उन्हें इस तरह भी निमंत्रण दे सकता है। वह कार्ड आज भी पूजा ने संभाल कर रखा हुआ है।

मेगा पीटीएम के दिन स्कूल ऐसे सजा हुआ था जैसे कोई उत्सव हो। गेट पर पेरेंट्स के स्वागत में बड़े–बड़े बैनर लगे थे, फूलों की माला लगी थी और रंगोलियां बनाई गई थी। सभी पेरेंट्स के लिए चाय–पानी की व्यवस्था की गई थी और स्कूल के गेट पर आने से लेकर टीचर्स के साथ मिलकर वापस जाने तक उनसे कई बार आग्रह किया गया कि वे चाय नाश्ता करके जाएं। पूजा की मम्मी को पता नहीं था कि टीचर से क्या बात करेंगे लेकिन जब टीचर ने बहुत प्यार से मम्मी को उसकी पढ़ाई–लिखाई और उसकी प्रगति के बारे में बताया तो उसके मम्मी–पापा का भी विश्वास और बढ़ गया। उन्होंने घर में भी अपनी बेटी की पढ़ाई के लिए बेहतर माहौल बनाने में मदद की।

एक और घटना है जब उसकी मम्मी स्कूल मैनेजमेंट कमेटी (एसएमसी) के सदस्य के रूप में शामिल हुईं। पूजा को यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि उसके स्कूल के बारे में लिए जा रहे निर्णय में उसके माता–पिता की भी भूमिका हो सकती है। अपनी मां को इस कमेटी का सदस्य बनते देखना उसके लिए बहुत बड़ी बात थी। मेंबर बनने के बाद से पूजा की माताजी शनिवार को होने वाली एसएमसी मीटिंग में जरूर हिस्सा लेतीं और अपनी बेटी के स्कूल की बेहतरी के लिए किए गए काम पर गर्व महसूस करती थीं। यह गर्व तब और बढ़ गया जब दिल्ली सरकार द्वारा हर स्कूल को एसएमसी फंड के अंतर्गत सात लाख रुपए की राशि दी जाने लगी। इस पैसे से पूजा की मां और एसएमसी के बाकी सदस्य स्कूल के प्रिंसिपल के साथ मिलकर कुछ बड़े–बड़े फैसले लेने लगे जैसे स्कूल की प्रत्येक मंजिल पर पीने के पानी का फिल्टर लगाया और कुछ कमरों में पढ़ने के लिए स्मार्ट बोर्ड लगवाए गए।

जब पूजा आठवीं क्लास में पहुंची तब उसके स्कूल की इमारतें बनकर तैयार हो चुकी थी। स्कूल आसपास के प्राइवेट स्कूल जैसा ही लग रहा था। नए कमरों में नए डेस्क पर बैठना बच्चों के लिए एक सपने के पूरे होने जैसा था। पूजा की जिंदगी में एक बड़ा बदलाव आया हैप्पीनेस पाठ्यक्रम से। जैसा नाम वैसा काम। इस पाठ्यक्रम ने पूजा की जिंदगी में खुशियां भर दीं। इसमें न तो कोई पाठ्यपुस्तक थी और ना ही कोई होमवर्क और ना ही इसका कोई टेस्ट होता था। हैप्पीनेस क्लास के शुरू में ही थोड़ी देर माइंडफुलनेस की प्रक्रिया की जाती। इसके बाद कहानी और

बहुत सारी एक्टिविटीज के माध्यम से जिंदगी के उन पहलुओं पर चर्चा होती थी जिससे पूजा को अपने पेरेंट्स और अपने दोस्तों के साथ अपने रिश्ते के बारे में काफी अच्छी समझ बनी। उसे अपने व्यवहार के बारे में काफी अच्छी समझ बनी। मन में उठने वाले भावों के बारे में भी उसकी अच्छी समझ बनने लगी थी। जैसे कब वह कुछ अलग करती है, कब मेहनत करना चाहती है और कब उसे गुस्सा आता है या दुखी होती है। उसे उसके सवालों के जवाब मिले जैसे,कौन सी बातें उसे अच्छी और कौन सी बुरी लगती हैं? उसकी कौन सी बातें दूसरों को अच्छी लगती हैं और क्या खराब लग सकती हैं? इन सब कठिन सवालों के जवाब उसे हैप्पीनेस की क्लास से प्राप्त हुए।

जब पूजा नौवीं क्लास में आई तो एक नया पाठ्यक्रम और लागू किया गया था जिसका नाम था एंत्रप्रन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम यानी कि ईएमसी। यहीं से पूजा ने ठान लिया था कि वह अपने मन से फेल होने का डर निकालकर, आत्मविश्वास से काम करेगी। उसने तय कर लिया था कि वह पढ़–लिख कर कुछ करके दिखाएगी और नौकरी मांगने की बजाए स्वयं को इस काबिल बनाएगी कि वह दूसरों को रोजगार दे सके। नौंवी और दसवीं में उसने खूब मेहनत की, जिसका नतीजा आज सब के सामने है।

पुरस्कार स्वरूप पूजा को एक टैबलेट भी दिया गया। पूजा ने टैब का इस्तेमाल कोरोना के दौरान ऑनलाइन क्लास में शामिल होने और नई–नई तकनीकों को समझने के लिए किया। यही सब सोचते–सोचते पूजा अपने माता–पिता और अध्यापिका के साथ गंतव्य स्थल पर पहुंच गई जहां मुख्यमंत्री जी से उसकी मुलाकात होनी थी। सभी बहुत उत्साहित थे। उसके माता–पिता गौरवान्वित महसूस कर रहे थे यह सोच कर कि जो लड़की 4 साल पहले अपनी किताब की दो लाइन ठीक से नहीं पढ़ पाती थी वह आज स्कूल की टॉपर है और मुख्यमंत्री के साथ चर्चा कर रही है।

भावना सावनानी
मेंटर टीचर

आप अपने विचार और सुझाव हमें मेल कर सकते हैं

हमारा मेल आईडी है–
delhishiksha02@gmail.com

एससीईआरटी और डाइट में अब यूजीसी के समान वेतन

दिल्ली देश का पहला ऐसा राज्य बन गया हैं, जहां एससीईआरटी और डाइट दोनों का यूजीसी के स्टैण्डर्ड पर फिर से गठन किया गया है। ये एक बहुत महत्वपूर्ण कदम है। विशेषकर टीचर्स की ट्रेनिंग की दिशा में देश भर में इसे बहुत ही प्रगतिशील कदम माना जा रहा है। दरअसल टीचर्स को ट्रेनिंग देने के लिए जिस तरह के योग्य टीचर ट्रेनर चाहिए, वह एससीईआरटी या डाइट के स्टैण्डर्ड के आधार पर सामान्यतः उपलब्ध नहीं होते हैं। ऐसे में यूजीसी के स्टैण्डर्ड के आधार पर एससीईआरटी और डाइट में टीचर ट्रेनर नियुक्त करना अब दिल्ली सरकार के लिए आसान होगा। दिल्ली सरकार का मानना है कि इससे उन्हें देशभर से उन लोगों को एससीईआरटी या डाइट में लाने में मदद मिलेगी जो टीचर ट्रेनिंग में दक्षता रखते हैं और नए–नए तरीके अपनाने का साहस रखते हैं।

एससीईआरटी और डाइट का पुनर्गठन केवल एक एडमिनिस्ट्रेटिव प्रक्रिया नहीं है बल्कि इसका एक मकसद है। दिल्ली सरकार के लिए टीचर्स की ट्रेनिंग बहुत बड़ी प्राथमिकता बन गई है। एक तरफ स्कूल की इमारतें ठीक हो गई हैं, दूसरी तरफ बच्चों के रिजल्ट भी अच्छे आने लगे हैं। देश–विदेश में टीचर्स को समझने और जानने का अवसर दिया जा रहा है। उनकी लीडरशिप ट्रेनिंग कराई जा रही है। टीचर ट्रेनिंग दो मायनों में बहुत जरुरी हो जाती है। पहला, वो टीचर जो अभी हमारे साथ काम कर रहे हैं, उनकी लगातार नए– नए तरीकों से ट्रेनिंग कराना और उसकी ऐसी व्यवस्था बनाना कि वो लगातार बेहद प्रोफेशनल तरीके से चलती रहे।

> एक मेंटर टीचर होने का अर्थ है एक तरफ विभिन्न परियोजनाओं और कार्यक्रमों को तैयार करना और दूसरी ओर अपने मेंटी स्कूलों में जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन की प्रक्रिया का एक हिस्सा बनने का दोहरा अवसर मिलना। यह आपको बहुत व्यावहारिकता के साथ चीजों को सुधारने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

जो नए छात्र टीचिंग प्रोफेशन में आना चाहते हैं, उनको बेहद प्रभावी ट्रेनिंग देना। उनकी नॉलेज और मोटिवेशन को बढ़ाना, ताकि वे जब किसी स्कूल में पढ़ाने जाएं, तो एक बहुत अच्छे मोटिवेटिड टीचर के रूप में मिसाल बनें। ये पूरे देश में शिक्षा के लिए बहुत जरूरी है। दिल्ली सरकार ने अब इस दिशा में कदम उठाया है जिससे टीचर्स को अपने साथ लाने का बहुत बड़ा मौका मिलेगा। इस कदम का सबसे बड़ा फायदा दिल्ली सरकार के स्कूलों में काम कर रहे ऐसे टीचर्स को हुआ है जो लंबे

समय से नेट क्वालिफाई कर चुके हैं या पीएचडी करके आगे यूनिवर्सिटी की तरफ जाने की सोच रहे हैं।

अपने योग्य साथियों को इसलिए गंवा देना क्योंकि वो किसी दूसरे पायदान पर जाना चाहते हैं, किसी भी व्यवस्था के लिए अच्छी बात नहीं मानी जाती है। दिल्ली सरकार द्वारा एससीईआरटी और डाइट को यूजीसी के मानकों के अनुसार कर देने से यहां पर काम करने वाले लोगों को यूजीसी की तरह असिटेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर का दर्जा प्राप्त होगा। सरकार के इस कदम से इन्हीं पदों के अनुसार वेतन और अन्य सुविधाएं भी मिलेंगी। यही नहीं, उन्हें रिसर्च और प्रयोग करने की भी पूरी आजादी होगी। सरकारी स्कूलों के बहुत सारे टीचर्स इस ओर काम करना चाहते हैं और इस दिशा में पहला कदम उठा लिया गया है।

शिक्षा जगत में साल 2020 का अंतिम चरण, एससीईआरटी दिल्ली के पुनर्गठन के रूप में एक क्रांतिकारी बदलाव का साक्षी रहा है। एससीईआरटी का यूजीसी मानकों के आधार पर पुनर्गठन करने से 612 असिस्टेंट प्रोफेसर के पद सृजित हुए। इन पदों में 25 प्रतिशत दिल्ली सरकार के स्कूल टीचर्स की प्रतिनियुक्ति के जरिए से भरने का निर्णय लिया गया। ये इस नए ढांचे की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस प्रावधान के तहत शिक्षा निदेशालय में पहले से ही कार्यरत उन टीचर्स को एक साक्षात्कार के द्वारा चयनित कर प्रतिनियुक्ति दी गई जो यूजीसी के नियमों के अनुसार योग्य पाए गए। नवनियुक्त असिस्टेंट प्रोफेसर की प्रतिनियुक्ति की अवधि 3–5 वर्ष तक तय की गई। मूलतः इस प्रकार की व्यवस्था के पीछे दो मुख्य कारण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं– पहला, स्कूलों में कार्यरत टीचर, क्लासरूम टीचिंग और सीखने–सिखाने की विधि को रोज जीते हैं। उन्होंने स्टूडेंण्ट्स के सीखने की प्रक्रिया को बारीकी से समझा है और चुनौतियों का समाधान निकाला है। अगर इन टीचर्स को टीचिंग–लर्निंग का स्तर ऊपर उठाने के लिए रिसर्च और ट्रेनिंग इंस्टिट्युट भेजा जाए, तो प्रैक्टिकल अनुभव की मदद से थ्योरी और प्रैक्टिस के बीच के अंतर को कम करने में सहायता मिलेगी। इस उद्देश्य से यह एक बेहद महत्वपूर्ण एवं सराहनीय प्रयास है।

वर्षों से शिक्षा जगत में अफसोस इस बात का रहा है कि टीचर्स के लिए जिस प्रकार के ट्रेनिंग प्रोग्राम और अन्य कार्यक्रम योजनाबद्ध किए जाते हैं, वो स्कूल स्तर पर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों से संबंध नहीं रखते। शिक्षण प्रक्रिया में जमीनी स्तर पर आ रही चुनौतियों से निपटने की दिशा में एससीईआरटी में सृजित कुल पदों में सें 25% पर स्कूल के टीचर्स का कार्यरत रहना एक सही प्रयास साबित होगा।

इसका दूसरा पक्ष स्कूली स्तर पर पढ़ा रहे टीचर्स के लिए अवसर के रूप में सामने आया है। योग्यता प्राप्त टीचर नए परिवेश में भी, नई ऊर्जा के साथ टीचिंग लर्निंग प्रक्रिया की प्लानिंग और एजुकेशन से समाज को एक नया आयाम दे पाएंगे। वे प्रोफेशनल डेवलपमेंट के लिए जिम्मेदारी लेंगे। इसके साथ टीचर्स को शिक्षा के क्षेत्र में रिसर्च करने के लिए खुला आसमान मिलेगा। वह वर्षों की सीखने–सिखाने की समझ को रिसर्च के रूप में एकत्रित कर, शिक्षा जगत में गुणात्मक सुधार कर पाएंगे। वे अपनी उपयोगिता के अनुसार अवसर पाकर आनंदित होंगे। ये प्रयास निश्चित ही शिक्षा जगत में एक विशेष कड़ी को जोड़ते हुए दिखता है। इसका पॉजिटिव रिजल्ट भी हमें देखने को मिलेगा। मेरे लिए यह एक सपने के पूरे होने जैसा है। जब से मैं शिक्षा निदेशालय में एक शिक्षिका के रूप में आई, तभी से मैं सोचती थी कि यदि मुझे टीचर ट्रेनिंग संबंधित कार्य करने का मौका मिला तो मैं जरूर कुछ बेहतरीन करके दिखाऊंगी। विभिन्न टीचर ट्रेनिंग कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हुए मैंने महसूस किया कि इन कार्यक्रमों में गुणात्मक रूप से कई बदलाव किए जाने अपेक्षित हैं। आज असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में एससीईआरटी में काम करते हुए मुझे इस बात का एहसास है कि यह मेरे लिए अवसर भी है और जिम्मेदारी भी।

अंजू पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट

हमारे शिक्षक साथी इस पत्रिका के लिए अपने लेख हमें मेल कर सकते हैं।

हमारा मेल आईडी है–
dillishiksha.articles@gmail.com

दिल्ली शिक्षा

आसान नहीं था लॉकडाउन के बाद बच्चों को ऑनलाइन क्लास तक लाना

तेजी से भागती दुनिया में कोरोना के कारण जैसे अचानक ब्रेक लगा दिए गए थे। एकदम से सब कुछ तितर–बितर हो गया था। 2 महीने के लॉकडाउन के बाद जब स्कूलों में ऑनलाइन क्लास लगाने की चुनौती सामने आई तो सबसे बड़ा सवाल था कि सरकारी स्कूलों के वे बच्चे जिनके घर मुश्किल से किसी एक आदमी के पास मोबाइल है, वो ऑनलाइन क्लास के लिए मोबाइल कहां से लाएंगे? मोबाइल मिल भी गया तो गरीब परिवार डाटा का खर्चा कैसे उठाएंगे? बात सिर्फ मोबाइल डाटा की ही नहीं थी, लॉकडाउन ने सब कुछ बिखेर दिया था। लोगों की नौकरियां छूट गई थी, लाखों लोग दिल्ली से बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश यहां तक की महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ तक अपने गांव को लौट गए थे। बहुत से बच्चों के माता पिता ने अपने फोन बंद कर रखे थे या शायद उन्होंने अपने नंबर बदल लिए थे। ऐसे में हम शिक्षकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी बच्चों को तलाशना, उन्हें मानसिक, आर्थिक रूप से ऑनलाइन क्लास के लिए तैयार करना। आज जब हम देखते हैं कि हमारे सरकारी स्कूलों में 94% बच्चों ने ऑनलाइन क्लास अटेंड की तो यकीन नहीं होता कि एक समय ऐसा भी था कि हम टीचर अपने बच्चों से कनेक्ट होने के लिए गली–गली उनके पुराने और नए संभावित पतों पर दरवाजे खटखटाने के लिए भी निकले थे। जी हां, लाखों बच्चे ऐसे थे जिन से मोबाइल पर संपर्क नहीं हो पा रहा था। उनके आसपास के रहने वाले बच्चे भी उनके बारे में कुछ नहीं बता पा रहे थे, तो उन्हें खोज निकालने का बीड़ा भी अपनी तमाम अन्य जिम्मेदारियों को निभाने के बीच हम शिक्षकों ने निभाया।

> हम शिक्षकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी बच्चों को तलाशना, उन्हें मानसिक, आर्थिक रूप से ऑनलाइन क्लास के लिए तैयार करना।

एक ओर जहां वह मास्क–चालान ड्यूटी, खाना बांटना, सीरो–सर्वे, डोर–टू–डोर सर्वे, डिस्पेंसरी ड्यूटी, क्वारंटाइन सेंटर में ड्यूटी, एयरपोर्ट ड्यूटी, प्रवासी मजदूरों को आनंद विहार, निजामुद्दीन, नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे– स्टेशन छोड़ने आदि में अपनी सुबह से शाम, शाम से रात और रात से सुबह तक ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से अपने काम को पूरा कर रहे थे, वहीं वे शिक्षक पढ़ने–पढ़ाने के क्रम को भी इस

महामारी में जारी रखे हुए हैं। इतनी जिम्मेदारियों के बीच उन्होंने छात्रों की शिक्षा में कोई बाधा न आये, इसके लिए अपनी जान तक दांव पर लगा दी। हमारे शिक्षकों ने इस महामारी में विद्यार्थियों से संपर्क साधने में दिन को दिन और रात को रात न समझा और अपने अथक प्रयासों से हमारे शिक्षा जगत को गौरवान्वित किया है। इस काम में प्रत्येक स्कूल के शिक्षकों ने भूमिका निभाई और सब ने नए–नए तरीके निकाल कर बच्चों को खोजने और उन्हें ऑनलाइन या सेमी ऑनलाइन क्लास तक लाने की मुहिम सफलतापूर्वक चलाई। हर स्कूल में ऐसी कहानियों का अपार भंडार है लेकिन यहां हम कुछ घटित घटनाएं आपके साथ साझा कर रहे हैं जिससे सबको पता लगे कि दिल्ली के सरकारी स्कूल के शिक्षकों ने शिक्षा के इस महान काम को सबसे कठिन समय में भी रुकने नहीं दिया।

- सर्वोदय कन्या विद्यालय बी–3 पश्चिम विहार की एक शिक्षिका को अपने विद्यार्थियों की पढ़ाई की इस कदर फिक्र थी, कि उन्होंने अपने छात्रों को खोजने के लिए कुरियर वालों और परचून के दुकानदारों की मदद ली। इसके लिए उन पर किसी अधिकारी का दबाव नहीं था अपितु उनकी आंतरिक प्रेरणा ने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया और कई दिनों की मशक्कत के बाद वह अपनी आखिरी विद्यार्थी तक पहुंच गईं। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच जो आत्मीयता का सम्बन्ध होता है, रानी भारद्वाज ने उसे चरितार्थ करके दिखाया।

- सर्वोदय विद्यालय सेक्टर–20, रोहिणी के टीचर डेवलपमेंट कोर्डिनेटर महेश जी ने विद्यार्थियों की पठन–पाठन में कोई रूकावट न आए इसके लिए छात्रों को राजनीति विज्ञान विषय के नोट्स बना कर घर–घर जाकर दिए। जब लोग कोरोना के डर से घर से बाहर नहीं निकल रहे थे, वहीं हमारे टीचर अपनी जान दांव पर लगाकर घर घर जाकर छात्रों की मदद कर रहे थे।

- इसी कड़ी में एक और नाम जुड़ जाता है सर्वोदय कन्या विद्यालय, पूठ कलां की अश्वनी उमक का, जिन्होंने देखा कि कुछ विद्यार्थी, ऑनलाइन क्लास से नहीं जुड़ पा रहे हैं। अन्य छात्रों की सहायता लेने के बावजूद भी जब वो उसे नहीं ढूंढ पाई, तब भी उन्होंने हार नहीं मानी और स्वयं कृष्ण विहार जाने का निर्णय लिया। अश्वनी उमक उस समय दो माह की गर्भवती भी थी। उन्हें रिक्शा में सफर करने से डॉक्टर ने साफ मना किया था। परन्तु उन्होंने ठान रखा था कि वो हर एक छात्र को खोज ही निकालेंगी। तंग रास्तों से होकर उन्होंने कई घंटों की मशक्कत के बाद एक–एक विद्यार्थी को खोज निकाला। उनके चेहरे पर जो गर्व

दिख रहा था, वो शब्दों में बयां करना मेरे लिए बेहद ही मुश्किल है।

- सर्वोदय सह–शिक्षा विद्यालय सेक्टर–8 रोहिणी के प्रधानाचार्य अवधेश झा को जब शिक्षक साथियों से यह पता चला कि विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षण गतिविधि से जुड़ना तो चाहते हैं, पर आर्थिक कारणों से मोबाइल खरीदने में असमर्थ हैं, ऐसे में प्रधानाचार्य अवधेश झा को एक रचनात्मक तरीका सूझा। उन्होंने विद्यार्थियों की मदद के लिए कई प्रोजेक्ट युद्ध–स्तर पर चलाये जिनमें प्रोजेक्ट शोभित, लेटस ज्वाइन हैंड, प्रोजेक्ट एम्पैथी शामिल थे। इसके लिए उन्होंने समुदाय के सहयोग से 300 से ज्यादा जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए मोबाइल–टैब जुटाए । सोच कर देखिये कितना प्रयास लगा होगा, इन मोबाइलों को जुटाने में। हम सब के लिए यह एक संख्या हो सकती है! पर विद्यार्थियों के लिए यह जिन्दगी थी। छात्रों को ढूंढने के लिए समुदाय में मुनादी कराने से लेकर आर्थिक सहायता करने में स्कूल ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

ऐसे न जाने हमारे हजारों शिक्षकों ने लीक से हटकर शिक्षा के क्षेत्र में आई इन चुनौतियों को सफलता से लांघने में एक साथ मशाल जलाकर हम सबको एक नई राह दिखाई है। सोचिये क्या विद्यार्थी इन शिक्षकों को ताउम्र भूल पाएंगे? शायद कभी नहीं! इस आपदा में चुनौतियों को अवसर में बदलने वाले इन अग्रिम पंक्ति योद्धाओं को हृदय से नमन ! इसलिए तो कहा गया है, जीवन चलने का नाम है।

जोगिंदर कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट

मेरी दृष्टि में सबसे अच्छा शिक्षक वह है जो अपने छात्र को ऐसे - ऐसे प्रश्न पूछना सिखा दें जिसके उत्तर खुद उसके पास भी नहीं है ऐसे प्रश्न सिखा दें जिसके उत्तर अभी है ही नहीं। ऐसे प्रश्नों से बेचैन और निरुत्तर होकर स्कूल और कॉलेजों से निकलने वाले छात्र ही आगे चलकर इतिहास रचते हैं।

मैंने अपनी बच्ची को सरकारी स्कूल में क्यों डाला

मिलिए सरकारी स्कूल में अध्यापक आलोक कुमार मिश्रा से जिन्होंने अपनी बच्ची को दिल्ली के सरकारी स्कूल में पढ़ाना तय किया.

बेटी को सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाने के बाद पिछले साल मुझे मेरे कई परिचितों ने फोन किया। उन्होंने मुझे ये समझाने की कोशिश की कि, पैसे बचाने के लिए क्यों मैं अपनी बेटी को सरकारी स्कूल में भेज कर उसके जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहा हूं। इस साल उनमें से कई लोगों के बच्चे मेरी बेटी के साथ उसी स्कूल में जाते हैं।

शुरुआत में ही साफ कहना सही होगा कि मेरी आर्थिक स्थिति सामान्य है। दूसरी क्लास के बाद बेटी शगुन को दिल्ली के एक प्राइवेट स्कूल से निकालकर सरकारी स्कूल के कक्षा तीन में एडमिशन कराने का निर्णय मैने सोच–समझ कर लिया था। मैं चाहता हूं कि मेरी बेटी समाज की वास्तविकता और विविधता को सही मायने में जाने। वह समझ सके कि हम जैसे मिडिल और लोअर मिडिल क्लास परिवारों से अलग भी एक दुनिया है। इस बहुरंगी दुनिया की कई जरुरतें हैं जिससे लोगों का आचार–विचार–व्यवहार तय होता है।

हमारे आसपास दिखाई देने वाली कुछ भिन्नताओं को समाज ने गढ़ा है जो विषमता और अन्याय को बढ़ावा देती हैं जैसे, जातिवाद, परिवारवाद, क्षेत्रवाद और ना जाने कितने और भेद। जिनको हमें ही जड़ से खत्म करना है। मैं चाहता हूं कि वह ये भी जाने कि बहुत सी विविधताएं स्वाभाविक हैं और वे हमारे जीवन को समृद्ध बनाती हैं, जैसे अलग–अलग बोलियां, धर्मों में विश्वास, कपड़े पहनने के तरीके आदि।

खैर सबसे पहले ये बता दूं कि बेटी का जो पिछला स्कूल था, मुझे बहुत वजहों से पसंद नहीं आया। एक तो वहां एक जैसे सामाजिक–आर्थिक वर्ग के बच्चों के लिए ही जगह थी। ग्लोबल कल्चर के इस दौर में बच्चों को संस्कार के नाम पर एकरेखीय संस्कृति से संबंधित संस्कारों को थोपना मुझे जंचा नहीं। मैं चाहता हूं कि मेरी बेटी मेरे देश की सभी संस्कृतियों और परम्पराओं के बारे में जानें।

हमारे संविधान में ये कल्पना साफ शब्दों में की गई है कि हम भारत के लोग एक राष्ट्र के रूप में जीवन को तार्किक और सेक्युलर बनाएं, जो विज्ञान पर आधारित हो और जहां हर किसी को अपने विश्वास

को मानने की आजादी हो। स्कूलों को इस दिशा में खुद प्रयास करने चाहिए न कि उल्टी दिशा में चलना चाहिए। उस प्राइवेट स्कूल में एक ही पहचान विशेष से जुड़े बच्चों की उपस्थिति थी। अब एक विविधता पूर्ण देश और समाज में रहते हुए ऐसे एकरंगी जगह पर शिक्षित होने वाले बच्चे कैसे भिन्नताओं की कदर करना सीखेंगे? आज इन प्राइवेट स्कूलों की चारदीवारी में 'हम' का मतलब बदल चुका है। यहां दूसरा कोई जो थोड़ा भी अलग है उसके लिए 'अन्य' के रूप में परायापन व्याप्त है। मैं नहीं चाहता कि मेरी बेटी किसी ऐसे स्कूल में जाए जहां हम का मतलब भारत के लोग ना होकर किसी संस्कृति या वर्ग विशेष के लोग बन जाए।

स्कूल ऐसी जगह है जहां बच्चे सिर्फ किताब में लिखे हुए को ही नहीं सीखते। बल्कि वहां का हर विचार–व्यवहार उनके जीवन का हिस्सा बन जाता है। इसीलिए मुझे कुछ प्राइवेट स्कूलों द्वारा शुरुआती क्लासों में अपनी अलग किताबों के प्रचलन पर कम भरोसा है। फिलहाल बेटी के पिछले स्कूल के पाठ्यक्रम को देखकर मैं ये कह ही सकता हूं। छोटी कक्षाओं की कहानियां लिंगभेद और रंगभेद से भरी पड़ी हैं। एक–दो बार मैंने बेटी की कक्षा अध्यापिका से इस बारे में बात भी की, पर वह शायद मेरी बात ही समझ नहीं पाईं। नेशनल करिक्युलम फ्रेमवर्क, 2005 पर आधारित एनसीईआरटी की किताबें अपनी बहुत सी सीमाओं के बावजूद बेहतरीन हैं। ये किताबें राष्ट्र की अलग–अलग मिली जुली संस्कृति को शामिल करती हैं।

अब मेरी बेटी की क्लास में विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग के बच्चे भी हैं। अब उसकी दुनिया एकरंगी नहीं रही। घर आकर वो जो सवाल पूछती है वो अब बदल गए हैं। हालांकि वह अभी बहुत छोटी है और दुनियादारी इतना नहीं समझती। मुझे उम्मीद है कि अब अलग होना उसे डराएगा नहीं और वो ये भी समझेगी कि वो भी दुनिया के लिए अलग हो सकती है। इस अलग होने के प्रति सम्मान की भावना ही सबसे बड़ी जीत है। मुझे पूरा विश्वास है कि वह आगे जाकर कुछ भी करे, कुछ भी बने लेकिन किसी से पहचान के आधार पर नफरत नहीं करेगी। वो सभी को हम में शामिल करेगी और उनके अधिकारों को लेकर संवेदनशील होगी।

अपनी बेटी के लिए ऐसा सोच पाना संभव भी नहीं था अगर पिछले कुछ सालों में दिल्ली के सरकारी स्कूल ना बदले होते। चाहे मैं अपनी बेटी को कितना ही प्रगतिशील नागरिक बनाने के बारे में सोचता, पर एक पिता होते हुए कैसे एक जर्जर ढांचे वाले स्कूल में अपनी बेटी को पढ़ने भेजता, जहां पढ़ाई को लेकर गंभीरता की कमी हो। तीस साल पहले निजीकरण की नीतियों ने जब अमीरों के लिए महंगे स्कूल और गरीबों के लिए अभावग्रस्त सरकारी स्कूल का बंटवारा किया तो शिक्षा एक प्रोडक्ट (वस्तु) बन

गई। जिसे वही खरीद सकता है, जिसके पास पैसा है।

2015 में दिल्ली सरकार ने एजुकेशन पर बजट का लगभग एक चौथाई खर्चा आवंटित करके दिल्ली ही नहीं, दुनिया को चौंका दिया। एक भुला दिए गए मूलभूत अधिकार को सरकार सार्वजनिक विमर्श के केंद्र में ले आई। जर्जर स्कूलों की इमारतों को इस लायक बनाया कि वो दिल्ली के सबसे महंगे स्कूलों से मुकाबला कर पाएं। शिक्षकों की ट्रेनिंग के लिए उन्हें देश–विदेश भेजा। सरकार ने हैप्पीनेस–ईएमसी जैसे नए करिकुलम लागू किए। आज इन बदलावों को दिल्ली में हर कोई महसूस कर रहा है। सरकारी स्कूल ही सभी को समान और बेहतर शिक्षा दे सकते हैं क्योंकि यही उनका लक्ष्य है। आज एक पिता के रूप में मेरी खुशी का अंदाजा भी आप लगा सकते हैं, जब मैं अपने कई परिचितों को वापस सरकारी स्कूल का रुख करते देख रहा हूं। यह हमारे बच्चों के सही स्कूल में वापसी के साथ–साथ स्कूलों की वापसी भी है।

आलोक कुमार मिश्रा
प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान)

हमारे स्कूलों में आने वाला हर बच्चा उगते हुए सूरज के समान है। अभी वो उगते हुए सूरज की किरण जैसा है। जिसमें सूरज होने की असीम संभावनाएं हैं। आज वो कुछ भी नहीं पर कल बहुत कुछ हो सकता है अगर उसे हमारा आदर और सम्मान मिले। उगते सूरज की हर किरण नमस्कार के योग्य है तो आइए उगते हुए सूरज को नमन करें और हर किरण को सूरज बनने में सहयोग करें।

\- मनीष सिसोदिया

मेंटर टीचर बने तो शिक्षा की दुनिया में नए दरवाजें खुले

एक शिक्षक के रूप में मेरे कैरियर की शुरुआत लगभग 17 साल पहले हुई थी। छात्रों के साथ अथक परिश्रम कर उन्हें और बेहतर करते हुए देखना बहुत संतोषजनक था। कुल मिलाकर अब तक की यात्रा बहुत सुखद रही थी। पर फिर भी कुछ बेहतर करने और सीखने की ललक सदा बनी रहती थी। हर व्यक्ति को अपने जीवन के खास मकसद की तलाश रहती है। मुझे भी तलाश थी एक ऐसे रोमांचक, चुनौतीपूर्ण अवसर की जो मुझे अपनी क्लास से आगे भी शिक्षा जगत में बेहतरीन कार्य करने का मौका दे, ये जानने में मेरी बेहद रुचि थी कि देश– विदेश में शिक्षा के बेहतरीन मॉडल कैसे काम करते हैं ?

मैं मानती हूं कि गतिशील रूप से बदलती दुनिया में आज एक शिक्षक न केवल एक शिक्षक है, बल्कि एक शोधकर्ता, एक सूत्रधार, एक चेंज मेकर है। अगर आप भी ऐसा मानते है तो मेंटरशिप प्रोग्राम आप ही के लिए है। इसने मेरे प्रोफेशनल कैरियर को नए आयाम दिए, मेरे कई सपनों को नई उड़ान दी। पीछे मुड़ कर देखती हूं तो यकीन नहीं होता कि इतना सब मैं और मेरे जैसे कई आम शिक्षक इतने कम समय में कर पाए। आपके सुझावों और नवाचारों का असर भला सिर्फ आपके अपने स्कूल तक ही सीमित क्यूं रहे ? यहां आपके काम की बैंडविड्थ कितनी बढ़ जाती है, ये अनुभव करने का विषय है।

26 फरवरी 2019 का दिन था। मैं अन्य साथी शिक्षकों के साथ विधानसभा के सत्र में भाग ले रही थी जिसमें शिक्षा मंत्री द्वारा सालाना शिक्षा बजट पेश किया जा रहा था। पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा में कई क्रांतिकारी परिवर्तनों में शिक्षकों की भूमिका को स्वीकार किया गया और इस महत्वपूर्ण संसदीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने का सम्मान दिया गया। मैंने सोचा एक दूरदर्शी सहभागी दृष्टिकोण के चलते हमने पदानुक्रम की सीमित सोच से आगे बढ़कर कितना लंबा रास्ता तय कर लिया है।

2016 में शिक्षा मंत्री का ''शिक्षकों के नाम पत्र'' पढ़ कर मैं बहुत प्रेरित हुई और तुरंत ही मेंटर टीचर के लिए आवेदन भर

> एक मेंटर टीचर होने का अर्थ है एक तरफ विभिन्न परियोजनाओं और कार्यक्रमों को तैयार करना और दूसरी ओर अपने मेंटी स्कूलों में जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन की प्रक्रिया का एक हिस्सा बनने का दोहरा अवसर मिलना। यह आपको बहुत व्यावहारिकता के साथ चीजों को सुधारने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

दिया। इरादा था प्रोफेशनल डेवलपमेंट द्वारा स्वयं को एक शिक्षक के रूप में और बेहतर बनाना, साथ ही एक ऐसे व्यापक मंच की तलाश जिसके द्वारा मैं अमेरिकन राज्य विभाग के फुलब्राइट प्रोग्राम से प्राप्त अपनी शिक्षाओं को साझा कर सकूं। मैं शिक्षण में वैश्विक दृष्टिकोण को कई शिक्षक साथियों तक पहुंचाने के लिए बहुत उत्साहित थी।

मेंटर टीचर प्रोग्राम मेरी उम्मीद से कहीं अधिक निकला। सदा विस्तार करने वाले कैनवस के अनुरूप इसने मेरी कल्पना और प्रतिभा को नई उड़ान दी। ये सहायक पुस्तक 'प्रगति' बनाने, लर्निंग आउटकम्स तैयार करने, ब्रिज कोर्स डिजाइन करने, हैप्पीनेस, ईएमसी और हाल ही में देशभक्ति जैसे कुछ विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर काम करने की एक बेहद समृद्ध यात्रा रही है। चाहे वह दीक्षा शैक्षिक मंच के लिए कंटेंट क्यूरेट करना हो या कोर अकादमिक यूनिट के साथ नए मूल्यांकन दृष्टिकोणों पर आधारित पेपर तैयार करना या इस बारे में मंथन करना कि दिल्ली का मुख्य पाठ्यक्रम कैसा हो। इस प्रोग्राम ने मेरे भीतर चिंतनशील व्यवहार के विविध अवसरों को प्रस्तुत किया। एक शिक्षक के रूप में, मेंटर टीचर प्रोग्राम ने मुझे चेंज मेकर के रूप में खुद पर विश्वास दिलाया।

इसके जरिए आप सीधा उन लोगों से जुड़ते हैं जो यह तय करते हैं कि क्लास का डिस्कोर्स क्लासरूम में क्या होगा? सबसे सुखद इस यात्रा में रहा कि एक शिक्षक होने के नाते हमारी अहम भूमिका को स्वीकार करते हुए हमारी आवाज सुनी गई और हमारी राय को महत्वपूर्ण माना गया। हमने खुद को शिक्षा मंत्री, शिक्षा सचिव, शिक्षा निदेशक, उनके प्रमुख सलाहकार के साथ शिक्षा में महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करते पाया। मसलन सीखने के परिणामों को तैयार करना और मापना, कैसे बदलते मूल्यांकन के माध्यम से कक्षा की पेडागॉज़ी में बदलाव लाया जाए? शिक्षकों की कार्यशालाओं को सुविधाजनक एवं गुणवत्तापूर्ण कैसे बनाया जाए? सीखने की नई रणनीतियां कौन सी हों? एक शिक्षक के लिए अपनी आवाज का इस तरह से सुना जाना अकल्पनीय था।

कितनी बार आपने एक शिक्षा मंत्री को पाठ्यक्रम के लिए तैयार की गई गतिविधि या मॉडल टेस्ट पेपर की सराहना करते हुए देखा है? या शिक्षा निदेशक खुद आपसे पूछें कि वर्कशीट्स को तैयार करते समय आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा? आखिर कब और कैसे ये लोग अपनी बेहद व्यस्त दिनचर्या से ऐसा करने के लिए समय निकालते हैं? शुरुआत में तो यकीन ही नहीं होता था कि ये सब सच है। कई बार ऐसा आभास हुआ जैसे दिस इज टू गुड टू बी टू।

एक मेंटर टीचर होने का अर्थ है एक तरफ विभिन्न परियोजनाओं और कार्यक्रमों

को तैयार करना और दूसरी ओर अपने मेंटी स्कूलों में जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन की प्रक्रिया का एक हिस्सा बनने का दोहरा अवसर मिलना। यह आपको बहुत व्यावहारिकता के साथ चीजों को सुधारने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। हर कार्य गहन चिंतन और विश्लेषण का परिणाम था। इस अंतर्दृष्टि ने मुझे कार्यशालाओं और ऑनसाइट ऑब्जर्वेशन के दौरान शिक्षकों के साथ काम करने में मदद की, उदाहरण के लिए एससीईआरटी के साथ सामाजिक विज्ञान के लिए पहली बार साथी मेंटर्स के साथ मिलकर एक बहुत समृद्ध और इंटरैक्टिव ओसीबीपी (ऑनलाइन क्षमता निर्माण मॉड्यूल) बनाया।

मेंटरशिप के दौरान एक्शन रिसर्च वर्कशॉप के अपने प्रशिक्षण के बाद मैंने अपने स्कूलों में एक्शन रिसर्च के क्षेत्र में पहला कदम रखा। मकसद था क्लासरूम ट्रांज़ैक्शन में शिक्षकों के लिए कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम के नए मॉडल के असर का विश्लेषण करना। मैंने और साथी मेंटर जागृति सिंह ने एससीईआरटी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में अपना पहला शोध प्रस्तुत किया। एक शोधकर्ता के रूप में यह देखना बेहद सार्थक रहा कि प्रभावी कार्ययोजना तैयार करने के लिए डेटा के विश्लेषण का उपयोग कैसे किया जा सकता है। कुल मिलाकर ये एक बहुत रोमांचक और प्रभावी यात्रा रही है। मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि प्रत्येक शिक्षक को अपने और दूसरों के लिए खोज, चिंतन, नवाचार की प्रेरणा देने के लिए लगातार शोध करते रहना चाहिए।

मेंटर टीचर प्रोग्राम निश्चित रूप से आपको 21वीं सदी के कौशलों को सीखते हुए शिक्षा के नए ईकोसिस्टम के लिए तैयार करता है। अगर आप अपने कंफर्ट जोन से परे जाने के लिए तत्पर हैं, तो मेंटर टीचर प्रोग्राम के रूप में एक बहुत ही रोमांचक और प्रोफेशनल डेवलपमेंट की यात्रा आपके लिए इंतजार कर रही है।

वंदना गौतम
मेंटर टीचर

हैप्पीनेस करिकुलम : जीवन में खुश रहने का आधार

सर्वोदय बाल विद्यालय, मस्जिद मोठ की क्लास आठवीं की छात्रा श्वेता ध्यानी अपनी टीचर पूनम के साथ हैप्पीनेस करिकुलम से जुड़ी एक कहानी बताती हैं जिसे हर टीचर को जानना बहुत जरूरी है।

मुझे हैप्पीनेस क्लास की सभी गतिविधियों में बहुत मजा आता है। इस सिलेबस के चारों भाग माइंडफुलनेस, स्टोरी, एक्टिविटिज और अभिव्यक्ति मुझे बहुत पसंद हैं। मुझे पहले बात–बात पर गुस्सा आ जाता था। गुस्से में मैं किसी को भी चिल्ला कर जवाब दे देती थी। एक बार मेरी दीदी मुझसे कुछ मांग रही थी, उस समय मैं अपना फेवरेट टीवी प्रोग्राम देख रही थी तो मैंने उनकी बात नहीं सुनी। जब उन्होंने जोर से आवाज लगाई तो मैंने गुस्से से उन्हें कहा, ''जो चाहिए, खुद ले जाओ, मुझे बार–बार परेशान मत करो'' तभी दीदी अंदर आई और मुझसे बिना कुछ कहे अपना सामान लेकर चली गई। कुछ दिन तक दीदी ने मुझसे बात नहीं की। तुनक में आकर मैंने भी उनसे कुछ नहीं पूछा।

एक दिन टीचर ने बहुत ही मजेदार गतिविधि कक्षा में करवाई जिसका नाम था, ''गुस्सा कैसी बला''। हैप्पीनेस क्लास की गतिविधि के दौरान मुझे महसूस हुआ कि गुस्सा करना तो किसी को भी अच्छा नहीं लगता। जब मुझ पर कोई गुस्सा करता है तो मुझे अच्छा नहीं लगता ठीक वैसे ही दूसरों को भी अच्छा नहीं लगता होगा। मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। मैं दीदी के पास गई और उनसे माफी मांगी। दीदी मेरा बदला हुआ रूप देखकर हैरान थी। उन्होंने इसका कारण पूछा तो मैंने उन्हें कक्षा में कराई गई गतिविधि के बारे में बताया। स्कूल में कराई गई एक गतिविधि किसी के व्यवहार में ऐसा भी बदलाव ला सकती है ये सोचकर दीदी हैरान थी। उन्होंने मुझे गले लगाकर खूब प्यार किया। मैं अपनी दीदी का खिला हुआ चेहरा देखकर मन ही मन अपनी टीचर को धन्यवाद दे रही थी,

> **हैप्पीनेस की इन क्लासों को पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पत्नी मेलानिया ट्रंप भी दिल्ली के सर्वोदय विद्यालय, नानकपुरा में जाकर स्वयं अनुभव कर चुकी हैं।**

जिन्होंने हमें हैप्पीनेस क्लास की इस गतिविधि से सीखने का मौका दिया। हैप्पीनेस क्लास से हमें रोज कुछ नया सीखने को मिलता है। अब मुझे गुस्सा कम आता है। मेरा बर्ताव भी सभी के प्रति काफी बदल गया है, थैंक्यू सो मच हैप्पीनेस क्लास!

कुछ दिन बाद श्वेता की दीदी हैप्पीनेस क्लास को समझने के लिए टीचर पूनम के पास आई। बातचीत के दौरान पूनम ने उन्हें बताया कि हैप्पीनेस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी जहाँ एक ओर खुशी पूर्वक जीने एवं स्वयं के साथ सामंजस्य स्थापित करना सीख रहे हैं तो दूसरी ओर अपनी जरूरतों को पहचानते हुए समझ और सजगता के माध्यम से अपने आप में बदलाव लाकर परिवार एवं समाज में खुशी का वातावरण बना रहे हैं। इस पाठ्यक्रम का आधार माइंडफुलनेस, कहानियां, गतिविधियां, चिंतन के प्रश्न तथा अभिव्यक्ति खंड हैं। हैप्पीनेस की सभी क्लासों में नियमित रूप से छात्र अपने विचारों, भावों और संबंधों में व्यवहार को समझने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। तीन हिस्सों में बंटे इस पाठ्यक्रम के द्वारा बच्चे, समझ एवं सजगता से खुशी को तलाश करना, भावों के माध्यम से संबंधों में खुशी को अनुभव करना तथा अपनी भागीदारी से परस्पर जुड़े समाज में जीना सीख रहे हैं। श्वेता की दीदी की तरह ही ऐसे अनगिनत पैरेंट्स हैं, जो अपने बच्चों के स्वभाव में आए बदलावों को टीचर्स के साथ साझा करते हैं। उनके बच्चे पहले की अपेक्षा सजग, अनुशासित और खुश रहने लगे हैं। हैप्पीनेस की इन क्लासों को पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पत्नी मेलानिया ट्रंप भी दिल्ली के सर्वोदय विद्यालय नानकपुरा में जाकर स्वयं अनुभव कर चुकी हैं। अमेरिकी अखबारों में छपे हैप्पीनेस क्लास के उनके अनुभव इस बात के प्रमाण हैं। इस पाठ्यक्रम द्वारा दिल्ली के छात्रों में आए बदलाव को श्रीलंका, अफगानिस्तान, भूटान आदि देशों के प्रतिनिधि भी यहां आकर अनुभव कर चुके हैं।

देश के अन्य राज्यों के लिए दिल्ली का हैप्पीनेस पाठ्यक्रम अब एक मिसाल बन गया है। उत्तराखंड, झारखंड और मध्यप्रदेश आदि राज्यों से आए टीचर्स और अधिकारियों के प्रतिनिधिमंडल ने हैप्पीनेस की क्लास के पाठ्यक्रम को आकर समझा है। और ऐसा क्यों न हो! छात्र अब अपने टीचर्स की बात ध्यान पूर्वक सुनते हैं, अपने से बड़ों के प्रति आदर भाव रखते हैं और अपने से छोटों के प्रति संवेदनशील हो रहे हैं। इसलिए वे समझ और खुशी के साथ परस्पर सामंजस्य को ध्यान में रखकर समाज में जीना सीख रहे हैं।

हरिशंकर स्वर्णकार,
मेंटर टीचर

हम शिक्षकों का नया साथी: सोशल मीडिया

"पिछले पंद्रह मिनट से तुम सब गिलहरी की तरह फुदक रही हो, कभी यहां, कभी वहां। आखिर माजरा क्या है?
"पंजाबी बाग स्थित मेरे एक मेंटी स्कूल की फिज़िकल एजुकेशन टीचर ने अपनी जोशीली आवाज़ में कक्षा दसवीं और ग्यारहवीं की कुछ छात्राओं से पूछा। मामला यह था कि इस स्कूल की हिंदी की अध्यापिका कविता रानी और कुछ छात्राओं ने मिलकर पुराने टूटे डिब्बों, प्लास्टिक की बोतलों के ढक्कन, पुरानी गेंदों और रोटी पैक करने वाली एल्युमिनियम फॉयल से एक तारामंडल तैयार किया था। उसी 'बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट' तारामंडल को देखने का निमंत्रण देती फिर रही थीं ये छात्राएं। अपने मेंटी स्कूल के इस सुखद और रौनक भरे दृश्य को देखना किसी मेले की रौनक को देखने से कम नहीं था।

कितनी खुशी होती है ना जब मिलकर मेहनत से किए हुए काम के विषय में कोई पूछता है, उसे देखता है, सराहता है। यही उत्सुकता और सराहना कुछ छोटे बड़े सपनों को साकार करने की प्रेरणा देती है। किसी एक उपलब्धि की प्रशंसा जीवन में अन्य उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। यहां उपलब्धियों से मेरा अर्थ केवल ज़ोन, जिला, राज्य या राष्ट्र के स्तर पर होने वाली प्रतियोगिताओं में इनाम जीतने भर से नहीं है अपितु विद्यालय तथा कक्षाओं में होने वाली गतिविधियों की सराहना से भी है। अक्सर ये सामान्य सी प्रतीत होने वाली गतिविधियां वास्तव में छात्र छात्राओं की उपलब्धियां होती हैं और इन उपलब्धियों की जानकारी प्रायः कक्षा या विद्यालय के स्तर पर ही सीमित रह जाती है। मेरा मानना है कि ऐसी छोटी बड़ी उपलब्धियों को बड़े स्तर पर साझा करना एक अध्यापक से अपेक्षित है।

वर्तमान में बड़े स्तर पर सूचनाओं को साझा करने के लिए सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम इत्यादि) एक बेहतरीन साधन है। इसी साधन का प्रयोग श्रीमती कविता रानी ने तारामंडल के मॉडल का वीडियो साझा करने के लिए किया। उन्होंने अपने मोबाइल से बच्चों के तारामंडल का एक छोटा सा वीडियो बनाकर, उसे अपने ट्विटर टाइम लाइन पर पोस्ट किया। 3–4 दिनों में ही ट्विटर पर इस वीडियो को लगभग 4500 लोगों ने देखा। अपने बनाए हुए मॉडल के वीडियो पर इतने व्यूज़ देखकर छात्राओं का मन बहुत प्रफुल्लित हुआ। उन्होंने अपनी इस खुशी को अपने अभिभावकों एवं परिवारजनों से भी साझा किया। उत्साह के साथ वे कुछ और नया करने के लिए भी प्रेरित हुईं। इसके बाद छात्राओं ने रोबोट का एक वर्किंग मॉडल भी तैयार किया और

अध्यापिका ने उसको भी सोशल मीडिया पर साझा किया।

हममें से बहुत से अध्यापक सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं। सोशल मीडिया पर हम अपने व्यक्तिगत पोस्ट साझा करते हैं और ये पोस्ट हमें अपने शुभ चिंतकों से जोड़े रखते हैं। हम में से कुछ अध्यापक अपने सोशल मीडिया पर विद्यालय संबंधित पोस्ट भी साझा करते हैं। जरा विचार करते हैं कि कैसा होगा यदि हम सब अध्यापक अपने विद्यालय में होने वाली रोज़मर्रा की पाठ्यचर्या विषयक और पाठ्य–सहगामी गतिविधियों को, विद्यालय की आधारिक संरचना को, विभिन्न पहल तथा नवाचारों को, उपलब्धियों और सफलता की विभिन्न कहानियों को भी सोशल मीडिया पर साझा करें? कैसा होगा यदि हम विद्यालय के कक्षा–कक्षों, सभागार, प्रयोगशालाओं, ब्लॉकों के नवीकरण / नवनिर्माण को भी साझा करें?

इनके साथ–साथ विद्यालय में होने वाले विशेष दिवसों जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस,वार्षिक दिवस, सांस्कृतिक मेला,वृक्षारोपण सप्ताह इत्यादि से संबंधित आयोजनों की भी पोस्ट सोशल मीडिया पर साझा करें।

एक प्रकृति प्रेमी विद्यालय प्रमुख श्री भरत ठाकुर अपने विद्यालय के पेड़–पौधों तथा पक्षियों से संबंधित पोस्ट सोशल मीडिया पर साझा करते हैं। इनसे प्रेरणा प्राप्त कर बहुत से अध्यापकों ने अपने विद्यालय में पक्षियों के लिए 'फीडर पॉट' लगाए हैं। एक और प्रेरणादायक पोस्ट साझा की संवेदनशील विद्यालय प्रमुख डॉ अरुण भाटिया ने। इन्होंने कोविड त्रासदी में अपने विद्यालय में 'हंगर रिलीफ एंड नाईट शेल्टर' में रहने वाले सभी 141 व्यक्तियों को अपने स्टाफ के साथ मिल कर कुर्ता–पाजामा भेंट किया। इन उदाहरणों से यह समझना मुश्किल नहीं होगा कि क्या गज़ब का योगदान है सोशल मीडिया का अच्छाइयों और सद्प्रवृतियों को प्रोत्साहित करने में।

सोशल मीडिया पर संदेश साझा करने के लिए कुछ अध्यापक तस्वीरों और वीडियो को पोस्ट करते हैं। कुछ अन्य अध्यापक प्रभावशाली शब्दों के माध्यम से अपनी बात रखते हैं। अपनी लेखनी से प्रभावित करने वाले ऐसे ही एक अध्यापक हैं श्री आलोक कुमार मिश्रा। आलोक विद्यालयी अनुभवों एवं समसामयिक मुद्दों को बहुत खूबसूरती से अपनी कविताओं, लेखों, संस्मरणों और कहानियों के माध्यम से सोशल मीडिया पर साझा करते हैं। ऐसे अन्य कई अध्यापक हैं जो विद्यालय संबंधित गतिविधियों को सोशल मीडिया पर बखूबी साझा करते हैं।

अमरीका के अध्यापकों की सोशल नेटवर्किंग पर वहां की प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रोफेसर शॉर्लेट गुनावर्देना ने शोध कार्य किया है।उनके अनुसार,"सोशल नेटवर्किंग शिक्षकों में आपसी वार्तालाप, सहयोग और योगदान को पोषित करता है।" जब कोई अध्यापक अपनी कक्षा के अनुभवों, कक्षा–कक्ष क्रियाओं अथवा वहां किए जा रहे प्रयोगों को सोशल मीडिया पर साझा करता है तो देश–विदेश के अन्य शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के साथ संबंध स्थापित

करने का रास्ता भी खुल जाता है। इससे अध्यापक के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को और गति मिलती है।

हम दिल्ली के सरकारी विद्यालयों के अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए भरसक प्रयास कर रहे हैं । इन प्रयासों की ऊर्जा का मूल स्रोत है दूरदर्शी एवं कुशल नेतृत्व, दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, सर्व हितकारी नीतियां, मौलिक एवं व्यवस्थित योजनाएं तथा इन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन। इन प्रयासों को और गति एवं ऊर्जा मिले, इसके लिए आवश्यक है कि अध्यापक अपने सोशल मीडिया पर विद्यालय से संबंधित क्रियाकलाप, उपलब्धियां एवं अनुभवों को साझा करें। इसके साथ–साथ अध्यापक सोशल मीडिया का अपने व्यावसायिक विकास के लिए भी सर्वोत्तम प्रयोग करें। अब समय है कि हम शैक्षिक परिवेश में सोशल मीडिया को अपना अंतरंग मित्र बना लें।

References

Gunawardena, C. (2009). "A Theoretical Framework for Building Online Communities of Practice with Social Networking Tools. " Educational Media International 46(1), 3-16

Rosell-Aguilar, F. (2018). Twitter: A Professional Development and Community of Practice Tool for Teachers. Journal of Interactive Media in Education, 2018(1): 6, pp. 1-12, DOI: https://doi.org/10.5334/jime.452

मनु गुलाटी
मेंटर टीचर

शिक्षा, ज्ञान का वह हस्तांतरण है, जो नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से मिलता है। ये हस्तांतरण चलते हुए बच्चे का सहारा बने, बैसाखी नहीं। जिस प्रकार हम बच्चे के पैरों में बल आने पर अपना हाथ खींच लेते हैं। उसी प्रकार पुराना ज्ञान अपने हाथ का सहारा देखकर तत्काल हटने लगे। जिससे कि आने वाली पीढ़ी के लिए ये पीढ़ी नए ज्ञान का आविष्कार कर सके।

कोविड ड्यूटी में भी शिक्षक सरकार के हर कदम पर साथ

मार्च 2020 आते–आते कोरोना महामारी अखबारों और न्यूज चैनलों की खबरों से बाहर निकलकर एक सच्चाई के रूप में हमारी जिंदगी में दस्तक दे चुकी थी। अपने साथ ये महामारी लाई थी लॉकडाउन, असुरक्षा, भय और पलायन का एक भयंकर दुश्चक्र। स्कूल, बाजार, ऑफिस सब बंद कर दिए गये थे। बच्चों से घिरे रहने वाले हम टीचरों को घर में कुछ दिन ही इस तरह कैद होकर रहना भारी लग रहा था। जब 30 मार्च को डीएम ऑफिस से कोरोना संबंधी ड्यूटी आई तो मेरे लिए यह बिल्कुल नया और अनोखा अनुभव था। महामारी के बीच देश और समाज की सेवा का यह अवसर डरा भी रहा था और गर्वित भी कर रहा था। मुझे क्वारंटीन सेंटर, नरेला में लाए गये लोगों की देखभाल के लिए लगी टीम में तैनात किया गया।

बारह–बारह घंटे की लंबी ड्यूटी के दौरान हमने वहां क्वारंटीन किए लोगों के लिए खाने–पीने और साफ–सफाई की व्यवस्था में मदद करने, जरूरत का सामान पहुंचाने, मेडिकल जांच करवाने व भावनात्मक संबल देने आदि का काम किया। जब लोग क्वारंटीन टाइम पूरा करके वहां से जाते तो हमें शुक्रिया कहना न भूलते। हम शिक्षकों ने वहां अफवाहों को रोकने, जागरूकता फैलाने जैसे शिक्षकीय कामों को नये रूप में क्लास से बाहर सामुदायिक स्तर पर लागू किया।

कोरोना काल में टीचरों की भूमिका सिर्फ इतनी ही नहीं रही। व्याप्त असुरक्षा बोध से मजदूरों में पलायन की जो अफरा–तफरी फैली थी, उसे भी व्यवस्थित करने में वे जुटे रहे। मजदूरों का रजिस्ट्रेशन करने, उन्हें बस अड्डों तक सुरक्षित पहुंचाने के लिए स्वयं उनके साथ जाने जैसे काम बहुत दिनों तक रोजमर्रा का हिस्सा बने रहे। एक टीचर साथी शैलेन्द्र ने बताया कि, परिवार डरा रहता था कि कहीं इस भागदौड़ में कोरोना से बचाव न हो पाया तो क्या होगा? पर जो काम करना था वह करना था। लगातार थकान के बाद भी हम यह सोचकर लगे रहते कि ये गरीब अपने परिवार के पास पहुंच जाएंगे तो दुआ मिलेगी।

इसी तरह जगह–जगह बनाए गये नाइट शेल्टर्स में भी बहुत से टीचरों को ही व्यवस्था संभालने में लगाया गया। टीचर करमजीत सोढ़ी इसे याद करते हुए कहते हैं कि उस अफरातफरी में बेघरों, मजदूरों को हम कुछ पल चैन की नींद दे सके।इसे सोच बड़ा सुकून मिलता है। उस दौरान शेल्टर में आए बहुत से छोटे बच्चों के लिए हमने खुद अपने पैसे से दूध आदि का प्रबंध कराया।

कोरोना काल में भले ही स्कूल बंद रहे पर उन्होंने अपनी सामाजिक भूमिका से मुंह नहीं मोड़ा। स्कूलों को गरीबों को भोजन और राशन वितरण के केंद्र के रूप में बदलकर दिल्ली सरकार ने बखूबी इस संकट का निदान किया। टीचर्स ने गरिमा और सम्मान के साथ दूरी बरतते हुए लोगों तक सुरक्षित भोजन–राशन का वितरण किया। अन्यथा ये काल इन गरीब लोगों के लिए और भी पीड़ादायक होता। मंगोलपुरी के एक स्कूल टीचर रीना ने बताया कि, हमें पता था कि हम केवल राशन नहीं बांट रहे, हम तो जिंदगियां बचा रहे थे। हमने सबको पूरे सम्मान से राशन बांटा। इसका फायदा यह हुआ कि आज स्कूल के आसपास के समुदाय का हमसे जुड़ाव बढ़ा है। जब बच्चे क्लास में लौटेंगे तो इस जुड़ाव का फायदा हमें सीखने–सिखाने में भी मिलेगा। सच में यह आपदा लोगों को इस तरीके से एकजुट भी कर रही थी।

टीचरों ने हेल्थ सेंटर से लेकर घर–घर जांच और सीरो सर्वे करने तक में अपनी भूमिका का निर्वाह किया। शिक्षक साथी सतीश आनंद ने बताया कि मुझे शुरू से ही कम्युनिटी सर्विस में मजा आता था और मौका मिलते ही मैं ऐसे काम करता रहा हूं। कोविड काल ने विभागीय रूप से इस भूमिका को निभाने का मौका दिया। मैं बहुत खुश हूं। डोर टू डोर सर्वे में जुटी शिक्षिका मनु गुलाटी ने सोशल मीडिया पर अपनी इस भूमिका को जिस तरीके से लगातार प्रस्तुत किया वह शिक्षकीय भूमिका का नया नैरेटिव गढ़ गया। वह लोगों के स्वास्थ्य में मदद करने को आत्मिक सुख से जोड़ती हैं।

क्वारंटीन सेंटर से लेकर नाइट शेल्टर, राशन वितरण, सीरो और डोर टू डोर सर्वे, वैक्सीनेशन आदि तक में निभाई गई शिक्षकों की भूमिका को समाज में वर्षों तक याद किया जाएगा। इन सबके बीच ऑनलाइन टीचिंग करना, वर्कशीट बनाना, बच्चों की मदद के लिए ऑडियो–वीडियो बनाकर भेजना जैसे शिक्षकीय काम भी टीचर करते रहे। शिक्षकों के अनेक रूप इस दौरान सबने देखे और इनका हर रूप समाज और देश के हित में रहा। सच में टीचर कोरोना काल में अनुपम योद्धा साबित हुए। आपको भी ऐसा ही लगता है।

आलोक कुमार मिश्रा
प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान)

आईआईटी, जेईई कॉम्पिटिशन्स में अव्वल आते सरकारी स्कूलों के बच्चे

2015 में दिल्ली के शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया को एक सरकारी स्कूल के छोटे से बच्चे ने एक बहुत ही संवेदनशील बात कही थी। उसने कहा था–"देश का भविष्य हम थोड़े ही हैं, देश का भविष्य तो वो बच्चे हैं, जो प्राइवेट स्कूलों में पढ़ते हैं। हम तो सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे हैं, हम कहां देश का भविष्य हैं।" ये बात बहुत गहरी थी और दिल को छू लेने वाली थी लेकिन दिल्ली के राजनैतिक नेतृत्व और शानदार प्रशासन तथा एक से एक बेहतर अध्यापकों की टीम ने आज ये तस्वीर बदल दी है। आज दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे बड़े गर्व से ये महसूस करते हैं और बहुत शान से ये कहते हैं कि हम देश का भविष्य हैं। यह महज एक कोरा बयान नहीं है बल्कि हकीकत है।

आज दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चे मेडिकल और इंजीनियरिंग की अभेद्य समझी जाने वाली, बेहद मेहनत और योग्यता मांगने वाली परीक्षाओं को बिना किसी कोचिंग के केवल और केवल अपने सरकारी स्कूल के अध्यापकों की मदद से न सिर्फ पास कर ले रहे हैं बल्कि देश के बेहतरीन संस्थानों में दाखिला भी ले रहे हैं। दिल्ली के स्कूलों में आए बदलाव की कहानी केवल यहां की चमचमाती इमारतें या फिर यहां के अध्यापकों का देश विदेश में ट्रेनिंग लेना भर ही नहीं है। बल्कि असल बदलाव ये है कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चे अब आईआईटी, डीटीयू या देश के सर्वश्रेष्ठ मेडिकल संस्थानों आदि में प्रतियोगी परीक्षाएं पास कर दाखिला लेने लगे हैं।

इस साल जहां सरकारी स्कूलों के नतीजे 98 प्रतिशत रहे, वहीं सबसे बड़ी और उल्लेखनीय उपलब्धि इस बात की रही कि एक ही स्कूल आरपीवीवी सिविल लाइन्स के चार छात्र शिवम, आशीष झा, रवि और दीपांशु,देश के सर्वोच्च इंजीनियरिंग संस्थान आईआईटी के लिए सर्वोच्च रैंकिंग में अपनी जगह बनाने में कामयाब रहे। इसी तरह कई सरकारी स्कूल ऐसे हैं जहां से 20–25 यहां तक की 35 छात्राएं भी एक ही स्कूल से नीट का एग्जाम पास करने का रिकॉर्ड बना चुकी हैं।

सर्वोदय कन्या विद्यालय, मोलरबंद के 42 छात्रों ने नीट क्वालीफाई किया, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सूरजमल विहार के 15 छात्रों ने जेईई और 9 ने नीट क्वालीफाई किया। राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, पश्चिम विहार–1 के पांच छात्रों ने नीट क्वालीफाई किया, एसकेवी, यमुना विहार सी–1 के 24 छात्रों ने नीट क्वालीफाई किया। आरपीवीवी, सिविल लाइन्स के चार छात्र

जेईई पास करके आईआईटी में गए आरपीवीवी, गांधीनगर के 10 छात्रों ने जेईई और 8 ने नीट क्वालीफाई किया

आईआईटी के अलावा, डीटीयू, आईआईआईटीडी, एनएसआईटी, एनएसयूटी आदि बड़े – बड़े इंजीनियरिंग संस्थानों में दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या लगातार बढ़ रही है। सबसे सुकूनदायक बात ये है कि देश का ये भविष्य देश के आम परिवारों से निकल रहा है। एक रिक्शा चलाने वाला, एक प्रेस करने वाला, घरों में काम करने वाली मेड, सामान्य दुकानदार, सुरक्षागार्ड के बेटा–बेटी अब ये सपना देख रहे हैं कि वो भी आईआईटी या मेडिकल के एग्जाम पास कर सकते हैं और वह भी अपने सरकारी स्कूलों में पढ़ाई कर बिना किसी हाई प्रोफाइल कोचिंग के। तो आइये मिलते हैं ऐसे ही कुछ छात्रों से और उम्मीद करते हैं कि इनकी कहानियां हमारे स्कूलों में पढ़ रहे लाखों अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेंगी। हमारे अध्यापक इन कहानियों को हमारे हर उस बच्चे तक जरूर पहुंचाएंगे जिनमें ज़रा भी आगे बढ़ने की संभावना है।

दिल्ली के मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों के आईआईटी-जेईई क्वालीफाईड छात्रों का हौसला बढ़ाया।

आकांक्षा यादवः लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस में चयनित आकांक्षा ने राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सूरजमल विहार से पढ़ाई की। उनके पिताजी भागीरथ यादव वेस्ट विनोदनगर में टेलर हैं। मां नीरु यादव निजी कंपनी में काम करती हैं। उन्होंने साल भर के कठिन परिश्रम के बाद नीट का एग्जाम पास किया और लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस में एडमिशन लिया। आकांक्षा मानती हैं अगर हम कुछ पाने का सपना देखते हैं तो कभी भी उसे पाए बिना हार

नहीं माननी चाहिए।

रणवीर कुमारः आईआईटी दिल्ली में बीटेक में चयनित रणवीर ने आरपीवीवी, सूरजमल विहार से पढ़ाई की। उनके पिताजी हीरा लाल बिन्द– मयूर विहार फेज 3 में फैक्ट्री वर्कर हैं और मां सीता देवी गृहिणी। रणवीर ने लगातार दो साल 2015 और 2016 में मैन्टल मैथ्स में प्रथम स्थान जीता। 2016 में मॉस्को ओलम्पियाड में जीत हासिल करने वाले रणवीर कहते हैं– सरकारी स्कूलों के स्टूडेंट्स को खुद पर भरोसा होना चाहिए, यहां के टीचर्स और स्कूल आगे बढ़ने में बहुत मदद करते हैं।

प्रशांत चंद्र पुजारीः दिल्ली प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में चयनित प्रशांत ने राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सूरजमल विहार से पढ़ाई की। उनके पिताजी पूरन चंद्र पुजारी एक निजी कंपनी में क्लर्क हैं और मां कला देवी गृहिणी हैं। मॉस्को में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मेट्रोपोलिज ओलंपियाड (विषय– भौतिकी) में भी भाग लिया। वे अपने क्षेत्र में रिसर्च के लिए विदेश में उच्च शिक्षा के लिए आवेदन करने की योजना बना रहे हैं।

खुश गर्गः मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस में चयनित खुश ने राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय गांधीनगर से पढ़ाई की। उनके पिता नवीन कुमार गर्ग की शाहदरा में किताबों की दुकान है और मां गीतू गर्ग एक गृहिणी हैं। लॉकडाउन में नीट और जेईई के लिए विशेष किताबें खरीदना नामुमकिन था क्योंकि मुश्किल से पिताजी की किताबों की दुकान से घर का खर्च चलता था। अध्यापकों के मार्गदर्शन में सेल्फ स्टडी करके उन्होंने नीट और जेईई दोनों में बेहतर अंक प्राप्त किए। लोगों के प्रति सेवा भाव रखने वाले खुश ने इसीलिए मेडिकल लाइन में जाने का निर्णय लिया।

हरीशः इसी साल आईआईएम रांची में चयनित हुए, एमबीए में चयनित हरीश ने राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय लाजपत नगर से पढ़ाई की। उनके पिता रामयज्ञ बदरपुर में बिजली के रेग्युलेटर्स बनाते हैं और मां सुरमा देवी गृहिणी हैं। हंसराज कॉलेज से बीकॉम ऑनर्स करने के बाद उन्होंने एक नौकरी करने के साथ एमबीए की तैयारी की। किसी मल्टी नेशनल कंपनी के साथ काम करके बिजनेस मैन बनने की प्लैनिंग करने वाले हरीश बताते हैं कि एक समय मुझे लगता था कि सरकारी स्कूल के बच्चों को बिजनेस मैन बनने के सपने नहीं देखने चाहिए पर पढ़ाई का स्तर बढ़ने और मेरे परिणाम सुधरने से सारे रास्ते साफ होते चले गए।

आयुष बंसलः आईआईटी रुड़की में बीटेक इलैक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन में चयनित आयुष ने राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय पश्चिम विहार से पढ़ाई की।

उनके पिता सुभाष बंसल नांगलोई में किताबों की दुकान पर काम करते हैं और मां सरोज बंसल गृहिणी हैं। दसवीं क्लास में सुंदर पिचाई से प्रभावित होकर इंजीनियर बनने का सपना देखने वाले आयुष ने अपने स्कूल के अध्यापकों के निर्देशन में सेल्फ स्टडी के बल पर यह कमाल करके दिखाया।

शिवमः आईआईटी गुवाहाटी में बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग में चयनित शिवम

दिल्ली के मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों के नीट क्वालीफाईड छात्रों का हौसला बढ़ाया।

ने राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय सिविल लाइंस से पढ़ाई की। उनके पिता आनंद कुमार जहांगीरपुरी में फैक्ट्री वर्कर हैं और मां सुनीता गृहिणी हैं। वो कहते हैं, सरकारी स्कूल का छात्र होने के बाद भी मैंने अपने आप को कभी कम नहीं समझा दूसरी तरफ मेरे पैरेंट्स ने मुझे आर्थिक सहयोग दिया तो भाई और अध्यापकों के निर्देशन में आईआईटी का रास्ता साफ हुआ।

दिल्ली सरकार लगातार प्रयासरत है कि दिल्ली का हर वह परिवार जो अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा देना चाहता है और वह बच्चा जो मेहनत करके अच्छी शिक्षा हासिल कर जिंदगी में आगे बढ़ना चाहता है, उसकी पढ़ाई इसलिए ना छूट जाए कि उसके मां–बाप के पास इतने संसाधन नहीं थे। उसके सपने इसलिए ना टूटें क्योंकि वह सरकारी स्कूल में पढ़ता था और माता–पिता महंगी पढ़ाई या महंगी कोचिंग का खर्चा नहीं उठा सकते थे। इसके लिए छात्रों और अध्यापकों की कड़ी मेहनत सबसे ज्यादा सराहनीय है। हमें उम्मीद है कि 2021 में ये संख्या और भी ज्यादा बढ़ेगी और दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चे देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में फिर कमाल करेंगे।

अरुण पटेल
पी.एच.डी स्कॉलर

सहयोगः
कादंबरी लोहिया, मेंटर टीचर
संजय प्रकाश शर्मा, मेंटर टीचर

HIGH FEES NO LONGER AN OBSTACLE IN REALISING YOUR DREAMS!

DELHI GOVERNMENT'S 'FEE ASSISTANCE SCHEME' FOR STUDENTS ENROLLED IN UNDERGRADUATE COURSES FROM EDUCATIONAL INSTITUTES, COLLEGES AND UNIVERSITIES AFFILIATED TO DELHI STATE PUBLIC UNIVERSITIES

ELIGIBILITY (Annual Family Income from all sources)	QUALIFYING MARKS (All subjects)	FINANCIAL ASSISTANCE
Category 1 - Ration card holders under National Food Security Scheme	60%	100%
Category 2 - Annual Income Up to Rs 2.5 Lakh	60%	50%
Category 3 - Annual Income Between Rs 2.50 to Rs 6 lakh	60%	25%

Note: Relaxation of 5% in Qualifying marks for SC/ST Students

DOCUMENTS REQUIRED

- Copy of Marksheet/Certificate of having passed class XII or qualify examination.
- Certificate related to SC/ST Category issued by competent authority.
- Copy of Passbook/E-Statement of the student bank account which should be Aadhaar seeded.
- A declaration, as per Format at Annexure- "A" (available on Directorate of Higher Education website) by the student affirming that no financial support has been availed from any other scheme for meeting the cost of education for course/program.
- Copy of Valid Ration Card (for students requesting Financial Assistance of 100%)
- Copy of family Income certificate issued by SDM/competent authority (for students requesting Financial Assistance of 50%)
- Copy of Full Income Tax Return for both parents for the previous Financial Year. In the case of non-working parent, an affidavit affirming non employment certified by the office of SDM/competent authority and family income certificate issued by SDM/competent authority (for students requesting Financial Assista nce of 25%)

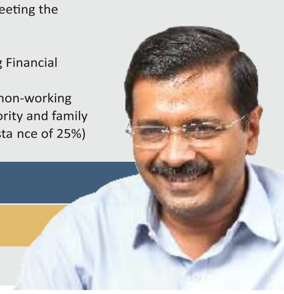

Apply online before March 15, 2021: https://edistrict.delhigovt.nic.in/

For more details: http://higheredn.delhigovt.nic.in/

दिल्ली सरकार

Directorate of Higher Education, Government of NCT of Delhi

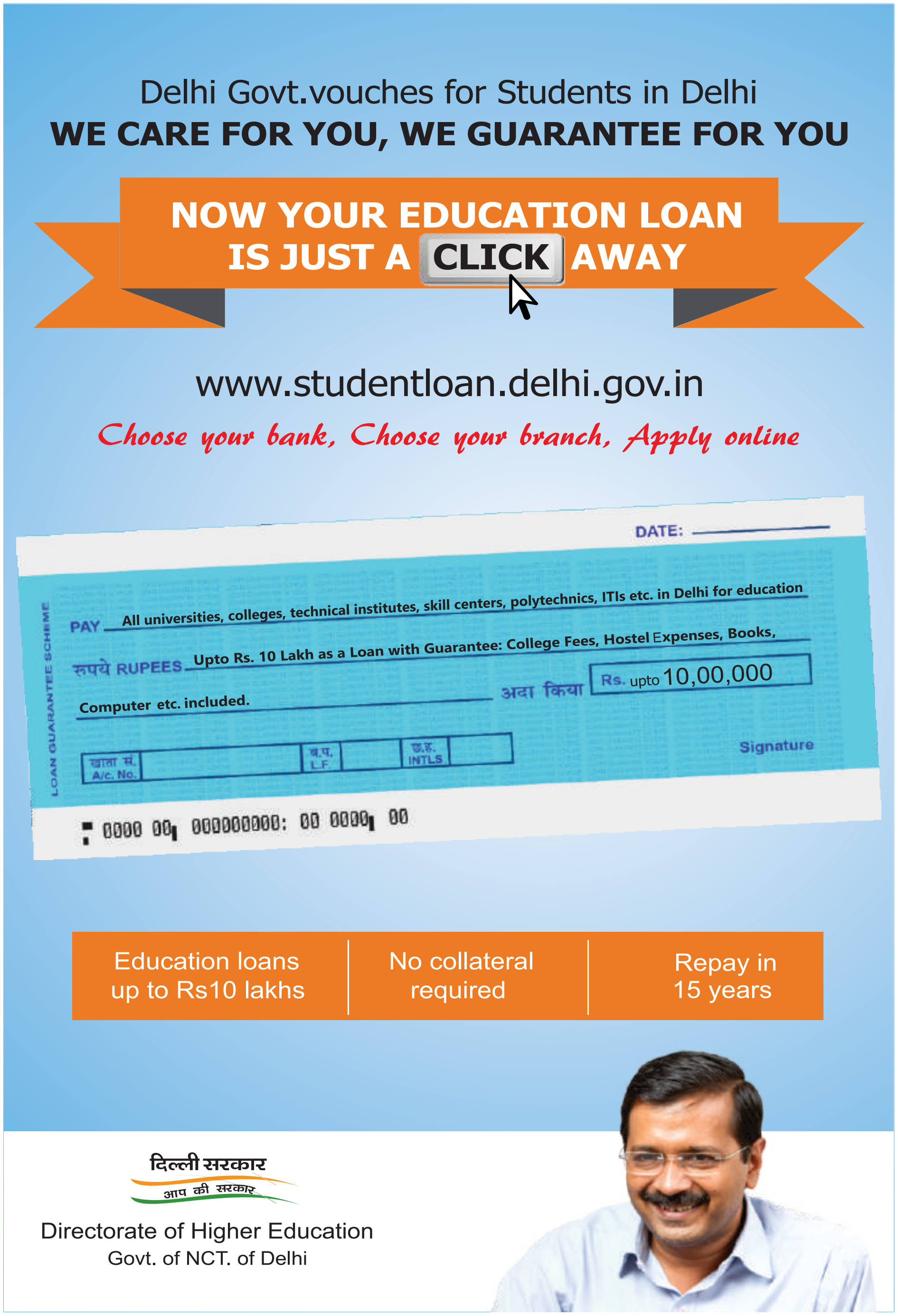

Delhi Govt.vouches for Students in Delhi
WE CARE FOR YOU, WE GUARANTEE FOR YOU
NOW YOUR EDUCATION LOAN
IS JUST A CLICK AWAY
www.studentloan.delhi.gov.in
Choose your bank, Choose your branch, Apply online
DATE:
LOAN GUARANTEE SCHEME
PAY All universities, colleges, technical institutes, skill centers, polytechnics, ITIs etc. in Delhi for education
रुपये RUPEES Upto Rs. 10 Lakh as a Loan with Guarantee: College Fees, Hostel Expenses, Books,
Computer etc. included.
अदा किया
Rs. upto 10,00,000
Signature
Education loans up to Rs10 lakhs
No collateral required
Repay in 15 years
दिल्ली सरकार
आप की सरकार
Directorate of Higher Education
Govt. of NCT. of Delhi

मनीष सिसोदिया
MANISH SISODIA

उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली–110002

Deputy Chief Minister, GNCTD
Delhi Secretariat, I.P. Estate,
New Delhi-110002

संदेश

'दिल्ली शिक्षा' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ होना हमारी दिल्ली की टीम एजुकेशन के लिए एक बेहद सुखद अवसर है। इस समय जब दिल्ली के शिक्षा मॉडल की चर्चा चारों तरफ हो रही है और लोग बेहद जिज्ञासा और कौतूहल से यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि दिल्ली के स्कूलों में क्या नया हो रहा है। ऐसे में यह पत्रिका उनके लिए काफी उपयोगी साबित होगी। लेकिन इसका सबसे बड़ा उपयोग यह होगा कि हमारे किसी एक स्कूल में एक शिक्षक द्वारा किये जा रहे विशेष प्रयोग या किसी इनोवेटिव आइडिया पर किये जा रहे काम की जानकारी दिल्ली के सभी शिक्षकों को मिल पाएगी और वह भी इससे प्रेरणा लेकर नए आइडियाज पर काम करने को प्रोत्साहित होंगे।

मैं उम्मीद करता हूं कि ये पत्रिका ना केवल दिल्ली के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के लिए बल्कि प्राइवेट स्कूलों के शिक्षकों के साथ–साथ उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए भी उपयोगी साबित होगी। साथ ही उच्च शिक्षा से सम्बंधित विभिन्न आवश्यक सूचनाओं को हमारे शिक्षकों के माध्यम से लाखों छात्रों तक सही तरीके से पहुंचाने में मददगार साबित होगी।

मैं पत्रिका के पुनः प्रकाशन के अवसर पर दिल्ली की टीम एजुकेशन को और सूचना एवं प्रचार निदेशालय की पूरी टीम को बहुत बधाई देता हूं।

मनीष सिसोदिया
शिक्षा मंत्री एवं उपमुख्यमंत्री,
दिल्ली सरकार

एक गरीब आदमी का बच्चा, एक आम आदमी का वह बच्चा जो सरकारी स्कूलों में पढ़ रहा है, वह भी अच्छी से अच्छी शिक्षा हासिल करे और जीवन में सफलता हासिल करे, ये एक सपना था। आज दिल्ली में यह सपना सच हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चे, जो बेहद सामान्य या गरीब परिवारों से आते हैं, हमारे योग्य अध्यापक उन्हे बेहतर सुविधाओं में बेहतरीन शिक्षा दे पा रहे हैं।

दिल्ली के हर बच्चे को अच्छी शिक्षा देने का सपना सच हो रहा है। अब तो नीति आयोग के सर्वे में भी दिल्ली के सरकारी स्कूल देश भर में सबसे ऊपर आए हैं।

मैं इसके लिए दिल्ली के शिक्षकों और विद्यार्थियों को उनकी कड़ी मेहनत के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

अरविन्द केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली

उदित प्रकाश राय, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली – 110054 द्वारा प्रकाशित एवं बी.एम. ऑफसेट प्रिन्टर्स, डी–247 / 17, सेक्टर 63, नोएडा, उत्तर प्रदेश, द्वारा मुद्रित। RNI Reg No. 23771/71